Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 41

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

12 अक्तूबर 2017 ई. 21 मुहर्रम 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

करम दीन मुझे सज़ा दिलाने के लिए फौजदारी मुकदमा दायर करेगा और कई समर्थक उस की मदद देंगे आख़िर वह स्वयं सज़ा पाएगा और ख़ुदा मुझे उस की बुराई से छुटकारा देगा अतः ऐसा ही प्रकट में आया।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इकहत्तरवां निशान - पुस्तक सिर्रुलख़िलाफ़ह के पृष्ठ-62 में मैंने लिखा है वह यह है कि विरोधियों पर प्लेग पड़ने के लिए मैंने दुआ की थी अर्थात् ऐसे विरोधी जिन के भाग्य में हिदायत नहीं। अत: इस दुआ के कई वर्ष बाद इस देश में प्लेग का आधिपत्य हुआ और कुछ कट्टर विरोधी इस संसार से गुज़र गए और वह दुआ यह थी :-

وخذرب من عادی الصلاح و مفسدًا و نزّل علیہ الرجز حقًّا و دمّرِ

و فرج کروبی یا کریمی و نجّنی ومـزّق خصیمی یا الھی و عفّرِ

अनुवाद - हे मेरे ख़ुदा ! जो व्यक्ति सद्मार्ग और शुभ कर्म का शत्रु है तथा उपद्रव करता है उसे पकड़ और उस पर प्लेग का अज़ाब उतार तथा उसे तबाह कर दे।

मेरी बेचैनियां दूर कर और मुझे चिन्ता और शोक से मुक्ति दे। हे मेरे दयालु ख़ुदा! मेरे शत्रु के टुकड़े-टुकड़े कर दे तथा मिट्टी में मिला दे।

यह भविष्यवाणी उस समय की थी जबकि इस देश के किसी भाग में प्लेग का नामो निशान न था। (देखिए मेरी पुस्तक 'सिर्रुलख़िलाफ़ह') इसी से।

और फिर पुस्तक एजाज़-ए-अहमदी में यह भविष्यवाणी थी -

اذا ما غضبنا غاضب اللہ صائِلًا علٰی معتدٍ یؤذی و بالسّوء یجھر

जब हम क्रोधित हों तो ख़ुदा उस व्यक्ति पर क्रोधित होता है जो सीमा का अतिक्रमण करता है और खुली-खुली बुराई पर तत्पर होता है।

ویأتی زمان کاسرٌ کُلّ ظالم وھـل یھلکنّ الـیـوم الا المـدَمّـرُ

और वह युग आ रहा है कि प्रत्येक अत्याचारी को तोड़ेगा तथा वही लोग तबाह होंगे जो अपने पापों के कारण तबाह हो चुके हैं।

وانّی لشرّ النّاس ان لم یکن لھم جــزاء اھـانـتـھـم صـغـارٌ یـصـغّـرُ

और मैं सब लोगों से निकृष्ट हूंगा यदि उनके लिए निन्दा का प्रतिफल निन्दा न हो।

قضی اللہ انّ الطعن بالطعن بیننا فـذالـک طـاعـون اتاھم لیبصروا

ख़ुदा ने यह निर्णय किया है कि व्यंग एवं कटाक्ष (ता'न) का प्रतिफल व्यंग और कटाक्ष है। अत: वही ताऊन है जो उनको पकड़ेगी।

ولمّا طغی الفسق المبید بسیلہ تمـنّـیـت لـو کان الـو باء المـتـبّرُ

और जब तबाह करने वाला पाप सीमा से अधिक बढ़ गया तो मैंने चाहा कि अब विनाशकारी ताऊन चाहिए।

इस के बाद यह इल्हाम हुआ

اے بسا خـانـۂ دشـمـن کـہ تـو ویران کـر دی

1 यह भविष्यवाणी 'हमामतुल बुशरा' में है। इसी से।

यह अख़बार 'अलहकम' और 'अलबद्र' में प्रकाशित किया गया। और फिर उपरोक्त दुआएं जो शत्रुओं की कठोर यातनाओं के पश्चात् की गईं। ख़ुदा के दरबार में स्वीकार होकर भविष्यवाणियों के अनुसार प्लेग का अज़ाब उन पर अग्नि की भांति बरसा तथा कई हज़ार शत्रु जो मुझे झूठा कहते थे तथा बुराई से नाम लेते थे तबाह हो गए, किन्तु यहां हम नमूने के तौर पर कुछ कट्टर विरोधियों का वर्णन करते हैं। अत: सर्वप्रथम **रुसुल बाबा** अमृतसरी उल्लेखनीय है जिसने मेरे खण्डन में पुस्तक लिखी और अपशब्दों का प्रयोग किया तथा इस अस्थायी जीवन से प्रेम करके झूठ बोला। अन्तत: ख़ुदा के वादे के अनुसार प्लेग से तबाह हुआ। तत्पश्चात् एक व्यक्ति **मुहम्मद बख़्श** नामक जो डिप्टी इन्सपैक्टर बटाला था, शत्रुता और कष्ट पहुंचाने पर कटिबद्ध हुआ, वह भी प्लेग से तबाह हुआ। इस के बाद **चिराग़दीन** नामक का आदमी निवासी जम्मू उठा जो रसूल होने का दावा करता था जिसने मेरा नाम दज्जाल रखा था तथा कहता था कि हज़रत ईसा ने मुझे स्वप्न में डंडा दिया है ताकि मैं ईसा के डंडे से इस दज्जाल का वध करूं। अत: वह भी मेरी भविष्यवाणी के अनुसार जो विशेष तौर पर उसके पक्ष में पुस्तक "दाफ़िउल बला व मै'यार अहलिल इस्तिफ़ा" में उसके जीवन में ही प्रकाशित की गई थी 4 अप्रैल 1906 ई. को अपने दोनों बेटों सहित प्लेग से मर गया। कहां गया ईसा का डंडा जिसके द्वारा मेरा वध करता था ? और कहां गया उसका इल्हाम؟ اِنّی لمن المرسلین खेद ! अधिकांश लोग आत्म शुद्धि से पूर्व हृदय में आई हुई बात को ही इल्हाम कहते हैं। इसलिए अन्तत: अपमान और अपयश से उनकी मृत्यु होती है तथा उनके अतिरिक्त और भी कई लोग हैं जो कष्ट देने तथा निन्दा में सीमा का अतिक्रमण कर चुके थे तथा ख़ुदा के आक्रोश से नहीं डरते थे तथा दिन-रात उपहास और अपशब्दों का प्रयोग करना उन की दिनचर्या थी। अन्तत: प्लेग का शिकार हो गए जैसा कि मुन्शी महबूब आलम साहिब अहमदी लाहौर से लिखते हैं कि एक मेरा चाचा था जिसका नाम नूर अहमद था। वह ग्राम भिड़ी चट्ठा तहसील हाफ़िज़ाबाद का निवासी था। उसने एक दिन मुझ से कहा कि मिर्ज़ा साहिब अपने मसीह होने के दावे पर क्यों कोई निशान नहीं दिखाते। मैंने कहा कि उनके निशानों में से एक निशान प्लेग है जो भविष्यवाणी के पश्चात् आई और संसार को खाती जाती है। इस बात पर वह बोल उठा कि प्लेग हमें नहीं छुएगी अपितु यह प्लेग मिर्ज़ा साहिब को ही तबाह करने के लिए आई है तथा उसका प्रभाव हम पर कदापि नहीं होगा मिर्ज़ा साहिब पर ही होगा। इतने ही वार्तालाप पर बात समाप्त हो गई। जब मैं लाहौर पहुंचा तो एक सप्ताह के बाद मुझे सूचना प्राप्त हुई कि चाचा नूर अहमद प्लेग से मर गए तथा उस गांव के बहुत से लोग इस वार्तालाप के साक्षी हैं तथा यह ऐसी घटना है कि गुप्त नहीं रह

शेष पृष्ठ 7 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पहले मसीह की वफात हो गई है हज़रत मसीह ही इमाम महदी हैं

मुहम्मद हमीद कौसर, कादियान

(भाग-1)

पहले मसीह,पुत्र मरियम की वफात हो गई है वह फिर से इस दुनिया में वापस नहीं आएंगे।

प्रिय पाठको! ईसाइयों का यह विश्वास है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अपने जिस्मानी शरीर के साथ आसमान में उठा लिए गए थे। और वह आख़री ज़माना में इंजील की शिक्षा देने के लिए फिर से आसमान से पृथ्वी पर उतरेंगे। ईसाइयों का कहना है कि सभी नबियों में से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ही आसमान पर उठाए गए थे और वही फिर उतरेंगे। इस कारण वह सभी नबियों से उत्तम हैं। ईसाइयों ने यही विश्वास मुसलमानों को भी समझाया। और दुर्भाग्यवश मुसलमानों की बहुत बड़ी तादाद ने भी यही विश्वास स्वीकार कर लिया। फर मुसलमानों ने सोचा कि मसीह तो आसमान से उतरेंगे और वह "मसीह" के रूप में होंगे। एक मुश्किल यह है कि हदीसों में एक "इमाम महदी" के ज़ाहिर होने का भी ज़िक्र है। इसका क्या करें? इसलिए उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया कि "मसीह" अलग व्यक्ति है और महदी कोई दूसरा व्यक्ति होगा। मुसलमानों के नादान मौलवी यही ग़लत और निराधार विश्वास मौका बे मौका मुसलमानों के सामने बयान करते रहे हैं और अख़बारों में भी इस प्रकार के लेख प्रकाशित करवाते रहते हैं। हाल ही में एक अखबार में इस शीर्षक के अधीन लेख प्रकाशित हुआ कि "हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम और महदी अख़िर जमां अलग अलग दो व्यक्तियों के नाम हैं।"

इस विचार से कि कहीं भोले मुसलमान इस तरह के लेख और भाषण से ग़लतफहमी का शिकार न हो जाएं, उनके अध्ययन के लिए कुरआन और हदीस की रोशनी में "मसीह और महदी" के एक आदमी होने के बारे में स्पष्ट और तर्कपूर्ण लेख लिखा जाता है

हदीस के अनुसार पहले और दूसरे मसीह के बीच अंतर

इस्लामी भाइयो !! हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत के लोगों को हर प्रकार की ग़लतफहमी से बचाने के लिए "पहले मसीह " और " दूसरे मसीह"के शरीर और बालों के अलग अलग रंग और अलग अलग आकार से वर्णन किया है

पहले मसीह के बारे में आपने फरमाया

فَاَمَّا عِیْسٰی فَاَحْمَرُ جَعْد

(बुख़ारी किताबुल अंबिया बाब वज़्कुर फिल किताब मरियम ....) अर्थात लाल रंग के घुंघराले बालों वाले थे।

: आपने "दूसरे मसीह" (जो कि महदी भी हैं) के बारे में फरमाया था।

فاذا رجل اٰدمُ سَبْطُ الشَّعْر..... (बुख़ारी किताबुल अंबिया बाब वज़्कुर फिल किताब मरियम ....) आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं [रोअया में] काबा की परिक्रमा कर रहा था तो एक आदमी देखा जिस का रंग गेहूं वाला और बाल सीधे थे मैंने पूछा यह कौन लोग हैं लोगों ने बताया यह [दूसरा] इब्न मर्यम है

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर दो मसीहों के अलग अलग रंग वर्णन करके स्पष्ट कर दिया कि आपके निकट दोनों " मसीह" अलग अलग दो इंसान हैं।

पहले मसीह का नाम

इंजील में लिखा है कि "इसका नाम 'यीशु ' रखना यीशु पैदा हुआ जो मसीह कहलाता है। (इंजील मैथ्यू बाव 1, आयत16-21)

कुरआन में पहले मसीह का नाम मसीह ईसा पुत्र मरियम है । (सूरत आले इमरान आयत 46)

दूसरे मसीह का नाम

दूसरे मसीह का नाम अल्लाह तआला ने"अहमद" बयान फरमाया है। दूसरे मसीह को इल्हाम में मुख़ातिब करते हुए फरमाया: یَااَحْمَدُ بَارَکَ اللّٰہُ فِیْکَ

अनुवाद: हे अहमद अल्लाह तआला ने तुझ में बरकत रख दी है।

(बराहीने अहमदिया भाग 3 रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 265 से 268)

दूसरे मसीह का पूरा नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद (अलैहिस्सलाम) है लेकिन "मिर्ज़ा ग़ुलाम" यह आपका परिवारिक नाम है। आप के पिताजी का नाम "मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब था। भाई का नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम कादिर था। चाचा का नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम मोहिउद्दीन था। आप का जन्म तेरहवीं शताब्दी के मध्य में 14 / शव्वाल 1250 हिजरी अर्थात 13 फरवरी 1835 ई को कादियान पंजाब भारत में हुा। और वफात 25 रबीउल अव्वल 1326 अर्थात 26 मई 1908 ई को हुई।

नोट: इससे पहले कि यह लेख अधिक विस्तार से वर्णन किया जाए यह बताना ज़रूरी है कि आगो "पहले मसीह और दूसरे मसीह" के शब्द हर दो हस्तियों के लिए उपयोग किए जाएंगे। ताकि सभी प्रकार के पाठक चाहे छोटे हों या बड़े, कम पढ़े लिखे हों या अधिक "मसीह" नाम के दोनों व्यक्तियों के अंतर को अच्छी तरह समझ जाए।

पहले मसीह, मरियम के बेटे की वफात हो गई है वह फिर से इस दुनिया में वापस नहीं आएंगे

पहले मसीह यानी हज़रत ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम जो लगभग दो हज़ार साल पहले फिलिस्तीन के शहर बेतलहम में पैदा हुए थे। एक लाख चौबीस हज़ार नबियों की तरह मर चुके हैं। अब वह फिर से इस दुनिया में वापस नहीं आएंगे। कुरआन और इंजील के अनुसार वह इस्राईल (यहूदी) की तरफ नबी व रसूल बनाकर भेजे गए थे। अत: वह उम्मते मुहम्मदिया की तरफ रसूल बनकर बिल्कुल नहीं आ सकते। अल्लाह तआला ने हमारे मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुरआन जैसी सही और पूर्ण किताब देकर भेजा। यह किताब क़यामत तक स्थापित और स्थायी रहेगी। इस के नाज़िल होने के बाद पिछले इंजील वाले ईसा इब्ने मरियम हरिगज़ नहीं आ सकते। कुछ मुसलमान यह कहते ही जब वह फिर से आएंगे तो वह नबी और रसूल की स्थिति में नहीं आएंगे। एसे मुसलमानों से सवाल है कि वे बताएं कि अगर किसी प्रधानमन्त्री के बारे में कहा जाए कि पहले तो यह प्रधानमन्त्री थे। लेकिन अब प्रधानमन्त्री पद के बिना आए हैं? बताइए बिना क्षमता का प्रधानमन्त्री क्या करेगा? तथ्य यह है कि यह सब कच्चे विचार हैं। असल बात यह है कि अल्लाह ने पहले मसीह यीशु को सलीब(क्रूस) से बचा लिया था। और वह हिजरत करके शाम, इराक , ईरान, अफगानिस्तान (और हाल पाकिस्तान) का सफर तय करके अंतिम उम्र में श्रीनगर कश्मीर पहुंच गए थे और वहाँ ही उनकी वफात हुई थी। उन की कब्र मुहल्लाह ख़ानियार श्रीनगर में मौजूद है। अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है कि जो मर जाते हैं वे कभी भी इस दुनिया में वापस नहीं आते।

اِنْ کُلٌّ لَّمَّا جَمِیْعٌ لَّدَیْنَا مُحْضَرُوْنَ (यासीन 32)

दूसरे मसीह की बेअसत (प्रादुर्भव)

हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दूसरे मसीह इब्ने मर्यम की ख़ुश ख़बरी दी थी आप ने फरमाया कि वह उम्मते मुहम्मदिया के एक आदमी होगा वही इमाम महदी होगा। इसके पहले मसीह से समता और समरूपता के कारण इसे "मसीह मरियम"का उपनाम दिया गया है। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा गया है कि दूसरा मसीह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम हैं। जिन्हें अल्लाह तआला ने इस युग में "मसीह मौऊद और इमाम महदी" बनाया है। और उनके युग के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो निशानियां बयान की थीं वे पूरी हुईं और हो रही हैं। यह भी याद रहे कि अक्सर पेशगोइयां लोगों की परीक्षा के लिए ताबीर वाली होती हैं वह मूल शब्दों में पूरी नहीं होतीं।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के हुक्म से चौदहवीं शताब्दी के छठे साल दिनांक 20 रजब 1306 हिजरी अर्थात 23 मार्च 1889 ई में एक जमाअत की नींव रखी जिसका नाम जमाअत अहमदिया मुस्लिमा रखा गया। हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह और महदी हैं। हदीसों की पुस्तकों का ध्यान से अध्ययन करने से पता चलता है कि मसीह और इमाम महदी दो अलग अलग व्यक्तित्व नहीं हैं बल्कि एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं। उस के दो मकामों के कारण, महदी और मसीह के दो अलग-अलग नाम दिए गए हैं। हमारी इस बात के समर्थन कि महदी और ईसा एक ही आदमी हैं हदीस की प्रारंभिक पुस्तकों से भी होती हैं। जैसे मौता इमाम मलिक जो हदीसों की प्रामाणिक और उच्च स्तर की किताब और उसके मुअल्लिफ़ इमाम मलिक (95 हिजरी से 179 हिजरी) पहले इमाम हैं जिन्होंने हदीसों का संग्रह तैयार किया है। इमाम शाफी, इमाम अहमद इब्न हंबल ने, आप से ज्ञान प्राप्त किया। इमाम शफी का कहना है कि आसमान के नीचे मौता इमाम मालिक से बढ़ कर कोई और सही पुस्तक नहीं है।

(मौता इमाम मालिक पृष्ठ 2 उर्दू अनुवाद अल्लामा वहीदुज़्जमां)

(शेष.....)

(अनुवादक शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

ख़ुत्बः जुमअः

मज्लिस शूरा जब कोई भी कार्य के लिए योजना बनाती है और शूरा के सदस्यों के विभिन्न परामर्श सामने आते हैं तो फिर एक परामर्श स्थापित होता है और फिर एक राय होती है या अधिकांश सदस्यों की एक राय होती है, और फिर इस पर अनुकरण करने के लिए एक कार्य प्रणाली प्रस्तावित की जाती है जो कि समय के ख़लीफा के पास स्वीकृति के लिए भिजवाई जाती है और जब मंज़ूरी हो जाती है तो उस पर अपनी सभी क्षमताओं और शक्तियों के साथ अनुमोदित, कार्यान्वयन और कार्यान्वित करवाना शूरा के सदस्यों की भी ज़िम्मेदारी होती है और सभी स्तर के अधिकारियों की ज़िम्मेदारी भी होती है।

तब्लीग़ के कार्य में सुधार या विस्तार करने के लिए यह जो प्रस्ताव यूनाइटेड किंगडम की शूरा में चर्चा में आई था और इस पर फैसले हुए या दुनिया के किसी भी देश में इस पर परामर्श हुए और समय के ख़लीफा से मंज़ूरी के बाद लागू करने के लिए जमाअतों में भिजवाए गए इस को कार्यान्वन करने और करवाने के लिए प्रत्येक मज्लिस शूरा और प्रत्येक स्तर के ओहदेदारों को भी भरपूर कोशिश करनी चाहिए। सिर्फ यह न समझें कि क्योंकि तब्लीग़ के बारे में एक प्रस्ताव है, इस लिए केवल सैक्रेटरी तब्लीग़ ही इस का ज़िम्मेदार है कि काम करे या अगर कोई परामर्श किसी भी अन्य विभाग से संबंधित है, तो संबंधित सैक्रेटरी जिम्मेदार है।

कोई भी उहदेदार हो किसी न किसी रूप में तब्लीग़ में भाग ले सकता है और यदि उहदेदार इसमें भाग ले रहे हों तो जमाअत के लोगों के सामने नमूने स्थापित हो रहे होंगे और ऐसे कई ऐसे लोग ऐसे होंगे बिना कुछ कहे, बिना विशेष ध्यान दिलाए अपने आप इन के नमूनों को देख कर इस कार्यकारणी को लागू करने के लिए इस्लाम का वास्तविक सन्देश पहुंचाने की कोशिश में शामिल हो जाएंगे।

राष्ट्रीय सैक्रेटरी तब्लीग़ का काम है जो हर कार्य पद्धति बनाई गई है यह हर जमाअत के स्थानीय सैक्रेटरी तब्लीग़ तक पहुंचनी चाहिए और फिर इस बात को सुनिश्चित करें कि इस कार्यकारणी का जमाअत के लोगों से संबंधित जो भाग है और जो जमाअत के लोगों से संबन्ध रखता है वह वहां की जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंच जाए।

सूरह अन्नहल आयत 126 की अत्याधिक सुन्दर तफसीर, इस आयत की रोशनी में तब्लीग़ के लिए मार्ग दर्शन नियमों का वर्णन और इस बारे में जमाअत के लोगों को नसीहत।

अल्लाह तआला ने सब से पहली चीज़ जो बताई वह हिक्मत के साथ तब्लीग़ है। यह हिक्मत क्या चीज़ है? हिक्मत के बड़े व्यापक अर्थ हैं और सफल तब्लीग़ के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हमें इन अर्थों का ज्ञान हो ताकि अपनी तब्लीग़ में इन बातों को हम समक्ष रखें। हमें अपनी तब्लीग़ी कोशिशों में एक निरन्तरता लाने के ज़रूरत है। यह नहीं कि साल में एक या दो बार तरिबयत सप्ताह मना लिया लिट्रेचर सड़क में खड़े होकर बांट दिया और समझ लिया कि तब्लीग़ का हक अदा हो गया।

अतः तब्लीग़ के लिए भी पहले अपनी अवस्थाओं में पवित्र परिवर्तन पैदा करने की ज़रूरत है एक सच्चे मुसलमान का नमूना जब इंसान बन जाए तो सवाल ही नहीं है कि लोगों का ध्यान पैदा न हो। लोग नमूना देख कर ही ध्यान देते हैं और इस तरह नियमित तब्लीग़ से पहले तब्लीग़ के रास्ते खुलने शुरु हो जाते हैं। अल्लाह तआला हमें इस के अनुसार काम करने की तौफीक प्रदान करे। आमीन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 8 सितम्बर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَ الْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَ جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ

(सूरह अन्नहल 126)

इस आयत का अनुवाद यह है, अपने रब्ब के मार्ग की तरफ हिक्मत से और अच्छी सलाह के साथ आमंत्रित कर और उन से एसी दलीलों के साथ बहस कर जो सर्वोत्तम हो निश्चित रूप से तेरा रब्ब ही उसे जो भटक चुका हो सब से अधिक जानता है और वह हिदायत पाने वालों का भी सब से अधिक ज्ञान रखता है।

दुनिया के कई देशों की जमाअतों ने अपनी मज्लिस शूरा में इस प्रस्ताव को रखा और उस पर बहुत अच्छी बहस की और अपनी कार्य शैली भी प्रत्येक जमाअत की मज्लिस शूरा ने प्रस्तावित की कि किस प्रकार हम इस्लाम की तब्लीग़(प्रचार) के काम को और इस्लाम के सच्चे संदेश को अपने देश के हर वर्ग में पहुंचाने में बेहतरी कर सकते हैं या इसे बेहतर आधार पर स्थापित करने के कार्य का विस्तार कर सकते हैं। जमाअत अहमदिया यू.के ने भी इस वर्ष अपनी शूरा के एजेंडे में इस प्रस्ताव को रखा था, इस पर मज्लिस शूरा ने बहुत विस्तार से चर्चा की और बहुत चर्चा कर के मुझे मंजूरी के लिए भिजवाया, लेकिन हमें हमेशा याद रखना चाहिए चाहे वह तब्लीग़ के काम के लिए योजना बनानी है या किसी अन्य कार्य के लिए योजना बनानी है। मज्लिस शूरा जब कोई भी कार्य के लिए योजना बनाती है और शूरा के सदस्यों के विभिन्न परामर्श सामने आते हैं तो फिर एक परामर्श स्थापित होता है और फिर एक राय होती है या अधिकांश सदस्यों की एक राय होती है, और फिर इस पर अनुकरण करने के लिए एक कार्य प्रणाली प्रस्तावित की जाती है जो कि समय के ख़लीफा के पास स्वीकृति के लिए भिजवाई जाती है और जब मंज़ूरी हो जाती है तो उस पर अपनी सभी क्षमताओं और शक्तियों के साथ अनुमोदित, कार्यान्वयन और कार्यान्वित

करवाना शूरा के सदस्यों की भी ज़िम्मेदारी होती है और सभी स्तर के अधिकारियों की ज़िम्मेदारी भी होती है।

अत: तब्लीग़ के कार्य में सुधार या विस्तार करने के लिए यह जो प्रस्ताव यूनाइटेड किंगडम की शूरा में चर्चा में आई था और इस पर फैसले हुए या दुनिया के किसी भी देश में इस पर परामर्श हुए और समय के ख़लीफा से मंज़ूरी के बाद लागू करने के लिए जमाअतों में भिजवाए गए इस को कार्यान्वन करने और करवाने के लिए प्रत्येक मज्लिस शूरा और प्रत्येक स्तर के ओहदेदारों को भी भरपूर कोशिश करनी चाहिए। सिर्फ यह न समझें कि क्योंकि तब्लीग़ के बारे में एक प्रस्ताव है, इस लिए केवल सैक्रेटरी तब्लीग़ ही इस का ज़िम्मेदार है कि काम करे या अगर कोई परामर्श किसी भी अन्य विभाग से संबंधित है, तो संबंधित सैक्रेटरी जिम्मेदार है। बेशक इस को कार्यान्वित करवाने के लिए प्रासंगिक सैक्रेटरी ही ज़िम्मेदार है, लेकिन विशेष रूप से तब्लीग़ और प्रशिक्षण के विभाग ऐसे हैं कि जमाअत के प्रत्येक उहदेदार का, प्रत्येक स्तर के उहदेदार का शामिल होना और अपनी नमूना दिखाना आवश्यक है।

इस समय चूंकि मैं तब्लीग़ के बारे में बात करना चाहता हूं, इसलिए इस बारे में मैं प्रत्येक उहदेदार को ध्यान दिलाना चाहता हूं कि वह अपने सैक्रेटरी तब्लीग़ से इस परामर्श प जमाअतों पर कार्यान्वन करवाने के लिए सम्पूर्ण सहयोग करें। स्वयं इस का हिस्सा बन कर जमाअत के लोगों के लिए एक नमूना प्रस्तुत करें। कोई भी उहदेदार हो किसी न किसी रूप में तब्लीग़ में भाग ले सकता है और यदि उहदेदार इसमें भाग ले रहे हों तो जमाअत के लोगों के सामने नमूने स्थापित हो रहे होंगे और ऐसे कई ऐसे लोग ऐसे होंगे बिना कुछ कहे, बिना विशेष ध्यान दिलाए अपने आप इन के नमूनों को देख कर इस कार्यकारणी को लागू करने के लिए इस्लाम का वास्तविक सन्देश पहुंचाने की कोशिश में शामिल हो जाएंगे। कुछ सैक्रेट्रियों के पास अपने विभाग में ज्यादा काम नहीं है इसलिए वे अधिक समय दे सकते हैं केवल निय्यत और इरादा की आवश्यकता है। बहरहाल राष्ट्रीय सैक्रेटरी तब्लीग़ का काम है जो हर कार्य पद्धति बनाई गई है यह हर जमाअत के स्थानीय सैक्रेटरी तब्लीग़ तक पहुंचनी चाहिए और फिर इस बात को सुनिश्चित करें कि इस कार्यकारणी का जमाअत के लोगों से संबंधित जो भाग है और जो जमाअत के लोगों से संबन्ध रखता है वह वहां की जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंच जाए।

परन्तु सब से बढ़े कर जो आयत मैंने लितावत की है,इस में अल्लाह तआला ने जो हमारा मार्गदर्शन किया है उसे समझें और उस के अनुसार प्रत्येक सैक्रेटरी तब्लीग़ अनुकरण करे, प्रत्येक उहदेदार इस के अनुसार कार्य करें। दाईयान विशेष रूप से करें। मैंने विशेष रूप से दाईयान का उल्लेख किया है कि इन लोगों ने विशेष रूप से अपने आप को प्रस्तुत किया है कि हम बाकी लोगों की तुलना में अधिक समय तब्लीग़ के लिए देंगे। वे यदि अपना समय भी दें ओर और ज्ञान भी हो, लेकिन उन बातों की तरफ ध्यान नहीं जो अल्लाह तआला ने वर्णन की हैं तो फिर इस में वह बरकत नहीं पड़ सकती, अच्छे परिणाम नहीं निकाले जा सकते जो निकल सकते हैं।

बहरहाल अल्लाह तआला ने जिस बात की तरफ ध्यान दिलाया है उस में सब से पहले हिक्मत है फिर "मौएज़तुन हसनतुन" है अर्थात अच्छी नसीहत। फिर फरमाया बहस में ऐसी दलीलें प्रयोग करो जो सर्वोत्तम हैं आज कल के तथाकथित उल्मा और आतंकवादी समूहों और संगठनों ने अपने कट्टर पंथ और हिक्मत के बिना और अप्रासंगिक बातों से इस्लाम को इतना बदनाम कर दिया है कि ग़ैर-मुस्लिम दुनिया समझती है कि इस्लाम हिक्मत से ख़ाली और दलीलों से ख़ाली धर्म है और कम अक्लों और मूर्खों का धर्म है। नऊज़ बिल्लाह और केवल उग्रवाद ही इसकी शिक्षा है। ऐसी परिस्थितियों में अल्लाह तआला के इस उपदेश के अनुसार तब्लीग़ करनी और अपने तब्लीग़ के सम्पर्कों को दृढ़ करना प्रत्येक अहमदी की एक महत्त्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है। इसलिए इस महत्त्व को पहले तो अहदेदारों को प्रत्येक स्तर पर समझना चाहिए। पिछले एक दो वर्षों में, इन अतिवादियों और कुछ तथाकथित उलमा के कामों ने इस्लाम को इतना अधिक बदनाम किया है और इस पर मीडिया ने भी इन बातों को इतना उछाला है कि यहां पिछले दिनों में एक सर्वे हुआ, जिस में इस्लाम के अतिवादी और अत्याचारी धर्म और मुसलमानों के अवांछित होने के बारे में सवाल किया गया तो बहुमत ने यही जवाब दिया कि इस्लाम बड़ा चरमपंथी धर्म है और मुसलमान अवांछित लोग हैं हम नहीं चाहते कि हमारे देश में मुसलमान रहें और देश के लिए ये लोग हानिकारक हैं जबकि यह सर्वेक्षण कुछ साल पहले किया गया था, इसके परिणाम पूरी तरह से उलट थे और अधिकांश लोग मुसलमानों को अच्छा समझते थे। तो ऐसी परिस्थितियों में हमें यह अंदाज़ा होना चाहिए कि कितनी मेहनत के साथ हमें अल्लाह तआला के बताए हुए तरीका के अनुसार तब्लीग़ करनी चाहिए।

अल्लाह तआला ने सब से पहली चीज़ जो बताई वह हिक्मत के साथ तब्लीग़ है। यह हिक्मत क्या चीज़ है? हिक्मत के बड़े व्यापक अर्थ हैं और सफल तब्लीग़ के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हमें इन अर्थों का ज्ञान हो ताकि अपनी तब्लीग़ में इन बातों को हम समक्ष रखें।

हिक्मत के एक अर्थ ज्ञान के हैं। तब्लीग़ करने के लिए ज्ञान होना चाहिए। कुछ लोग कह देते हैं उन्हें तो बहाना मिल गया है कि हमारे पास ज्ञान नहीं है इस लिए हम तब्लीग़ नहीं कर सकते। इस ज़माने में यह बहाना भी कोई बहाना नहीं है। हमें ज्ञान की दृष्टि से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ऐसी दलीलों से लैस कर दिया है और जमाअत के साहित्य में इस ज्ञान को उपलब्ध करा दिया गया है कि थोड़ी सी कोशिश भी काफी हद तक ज्ञान की मज़बूती प्रदान कर देती है फिर प्रश्न और उत्तर के रूप में ऑडियो वीडियो की सामग्री है फिर कई लोगों की वेबसाइटें हैं बहुत से लोग जब उन्हें सन्देश पंहुचाया जाए तो उन में कुछ दूसरे तो यह कह देते हैं कि इस समय हमारे पास लंबी बहस के लिए समय नहीं है, इन्हें पम्फेलट दिए जा सकते हैं और वेब साइट्स के पते दे दें तो जो रुचि रखने वाले हैं और बहुत सारे ऐसे हैं जो रुचि रखते हैं जिनके पास तत्काल वक्त नहीं है लेकिन बाद में जानकारी ले लेते हैं। बहुत से लोगों ने मुझे बताया कि उन्होंने इस प्रकार जानकारी ली है। अत: एक तो पहले अपने ज्ञान को बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि जिन से ज्ञान की बातें होनी हैं उन से इस तरीका पर बात की जाए जिस स्तर पर वे उतरते हैं। दूसरे यह पता होना चाहिए कि इस समय हमारे लिट्रेचर और वेबसाइट में कहां यह जवाब और सामग्री है। विभिन्न धर्मों से संबंध रखने वालों से और ख़ुदा तआला की हस्ती का इंकार करने वालों से उन की सोच के अनुसार उनके तर्कों के अनुसार हमें दलीलें देनी होंगी।

फिर हिक्मत के अर्थ यह हैं कि दृढ़ और पक्की बात हो।(अल्अकरब अल्मवारीद शब्द हकम) ऐसी दलील हो जो ख़ुद मज़बूत हो, न कि इस दलील के प्रमाणित करने के लिए हमें दलीलें तलाश करनी पड़े। अत: लंबी बहसों में पड़ने के स्थान पर समीक्षा करके आपत्ति देख कर फिर उन्हें ठोस दलील से रद्द करने की कोशिश करनी चाहिए और यह फिर तब्लीग़ विभाग का काम है कि अपने हालात के अनुसार ऐसी बातें और उनके रद्द की दलीलें एक स्थान पर जमा कर के और फिर जमाअतों को प्रदान करें ताकि अधिक से अधिक लोगों को ज्ञान वाली और ठोस और मज़बूत दलीलें आरोपों के रद्द की उपलब्ध हो सकें।

फिर हिक्मत का एक अर्थ इंसाफ भी है ऐसे आरोप दूसरों पर नहीं करने जो उलट कर हम पर भी बड़ सकते हैं। अल्लाह तआला के फज़ल से जमाअत अहमदिया में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरिबयत और लिट्रेचर के कारण और ख़लीफाओं के लिट्रेचर के कारण प्राय एसी अवस्था नहीं होती परन्तु प्राय: जो दूसरे मुसलमान हैं या दूसरे धर्मों के लोग हैं उन में यह बात दिखाई देती है। मुसलमान जो हमारे विरोद्धी हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ऐसे आरोप कर देते हैं जो अन्य नबियों पर भी हे सकते हैं बड़े बड़े कुछ लोग हैं ऐसे आरोप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर करते हैं जो दूसरे नबियों पर पड़ते हैं। अत: इस बारे में भी तब्लीग़ विभाग को यह आरोप और जवाब जमा करना चाहिए और जमाअतों को उपलब्ध करने चाहिए और ये बातें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग से ही हो रही हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर आरोप किए जाते हैं जो दूसरों पर भी पड़ते हैं उन के अपने धर्म पर भी पड़ते हैं और उस समय भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी उन के आरोप उन पर उलटाए हैं। उन्हीं के लिट्रेचर से या उन्हीं के ग्रन्थों से अन्य धर्म वालों को या मुसलमानों को भी बताया कि तुम जो आरोप करते हो वे वास्तव में आरोप नहीं हैं। इस्लाम पर भी काफिरों की तरफ से इसी तरह के आरोप किए गए थे।

तब्लीग़ विभाग को जैसा कि मैंने कहा कुछ कुछ छोटे छोटे आरोपों को जमा कर के जमाअतों को उपलब्ध कराने चाहिए। अगर अधिक से अधिक लोगों को तब्लीग़ के कामों में लगाना है तो यह मेहनत इस विभाग को करनी पड़ेगी, खर्च भी करना पड़ेगा।

इसी प्रकार हिक्मत के अर्थ दया और नर्मी के भी हैं। अत: तब्लीग़ में दया और नर्मी से काम लेने की बहुत अधिक ज़रूरत है। क्रोध और तेज़ी में बात करने से दूसरों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और वे समझते हैं कि दलील कोई नहीं इस लिए ग़ुस्सा में जवाब दिया जा रहा है। जो ग़ुस्सा दिखाए इस के साथ भी नरमी से बात करनी चाहिए। इस्लाम की शिक्षा पर आरोप करने वालों को तथाकथित उलमा

को ग़ुस्सा और तीव्रता ने ही अवसर दिया है कि वे आरोप करें वरना अगर आराम से बात की जाती तो ऐसे आरोप हैं जो वैसे ही ख़त्म हो जाते हैं।

फिर हिक्मत के अर्थ नबुव्वत के भी हैं। अत: इस दृष्टि से बहस करने और तर्क देने का मतलब यह है कि हमें कुरआन करीम जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरा इस की दलीलों और उसकी शिक्षा के अनुसार तब्लीग़ करनी चाहिए। इस्लाम पर आपत्ति करने वालों या आपत्ति करने वाले लोगों से प्रभावित होने वालों के सामने मैंने देखा है कि जब क़ुरआन की आयतों की रोशनी में बात की जाए तो उन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है।

फिर इसका अर्थ यह है कि अज्ञानता से रोकना। अत: ऐसे तरीके से बात करें जिससे आसानी से दूसरे को समझ आ जाए और उसकी अज्ञानता को दूर कर सकें। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी यह इरशाद फ़रमाया है कि लोगों की समझ और धारणा के अनुसार उनसे बात करो।

(कनज़ुल उम्माल जिल्द 10 किताबुल इल्म मिन किस्मुल अकवाल पृष्ठ 105 हदीस 29468 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इिलमिया बैरूत 2004 ई)

तो इसका यह भी अर्थ है कि सच्चाई के अनुसार और सहमति के अनुसार बात करनी चाहिए। यह नहीं कि दूसरों को प्रभावित करने के लिए यथार्थवादी घटनाओं से हट कर बात की जाए। ऐसी बातें जो तथ्यों और घटनाओं के विरुद्ध हों फिर ग़लत प्रभाव डालती हैं क्योंकि किसी न किसी समय में वास्तविकता प्रकट होती है। यही कारण है कि हमें हमेशा सच्चाई और सच के अनुसार बात करनी चाहिए।

फिर हिक्मत यथा अवसर और स्थान बात करने को भी कहते हैं अर्थात अगर यह विचार हो कि एक दलील से विरोद्धी में ग़ुस्सा पैदा होने और उस के चिढ़ने का ख़तरा है और फिर तब्लीग़ के स्थान पर लड़ाई झगड़ा और आक्रामकता का ख़तरा है। तो इस तरह के तर्कों से बचना चाहिए। इस बात से बचना चाहिए और ऐसी बात करनी चाहिए और ऐसा तर्क देना चाहिए जो यथा स्थान भी हो और दूसरे के मिज़ाज के अनुसार भी हो, दूरी बढ़ाने के स्थान पर क़रीब लाने वाले का कारण हो। कुछ लोग एक मज्लिस में बात करते हैं दूसरा वह बात सुनता है और अच्छा प्रभाव लेता है परन्तु उस समय फिर बात कर के चुप हो जाने के स्थान पर और यह सोच कर के कभी अवसर मिले तो अपनी बात करें इस मज्लिस में फिर इस आदमी के पीछे पड़ जाते हैं और बार बार उस की बातों को दुहराते हैं या तो उस को मनवाने की कोशिश करते हैं कि आज मनवा कर ही छोड़ना है जिस से दूसरा चिढ़ जाता है और करीब आया हुआ भी दूर हो जाता है और पहली बात का जो प्रभाव है वह भी दूर हो जाता है। इसलिए स्थान और अवसर और मिज़ाज को पहचानना भी तब्लीग़ के लिए बहुत ज़रूरी है। और यह इस बात की मांग करती है कि तब्लीग़ में जहां स्थायी मिज़ाज़ का होना आवश्यक है वहां व्यक्तिगत सम्बन्धों को बढ़ाने की भी बहुत ज़रूरत है। व्यक्तिगत सम्बन्धों से ही दूसरे के मिज़ाज को पहचाना जा सकता है।

अत: हमें अपनी तब्लीग़ी कोशिशों में एक निरन्तरता लाने के ज़रूरत है। यह नहीं कि साल में एक या दो बार तरिबयत सप्ताह मना लिया लिट्रेचर सड़क में खड़े होकर बांट दिया और समझ लिया कि तब्लीग़ का हक अदा हो गया।

आज कल यहां असाइलम वाले बहुत से लोग विभिन्न आयु के आए हुए हैं कुछ सेहत वाले और जवान हैं। कुछ थोड़ा बड़ी आयु के हैं जब तक इन के केसों का फैसला नहीं हो जाता अधिकतर के पास समय है। अत: ऐसे सभी लोगों को अपनी सेहत तथा आयु के अनुसार अपने आप को तब्लीग़ के लिए प्रस्तुत करना चाहिए। लिट्रेचर बांटने के लिए कम या अधिक समय देना चाहिए। भाषा नहीं आती तो लिट्रेचर ले जाएं कैसेटस ले जाएं। यदि सड़क पर साहित्य बांटना है तो स्थायी कार्यक्रम को विभाजित किया जाना चाहिए और यह असाइलम लेने वाले इस के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। सवाब भी है नेकी भी है और तब्लीग़ का फर्ज़ भी अदा हो जाएगा और इस की बरकत से उनके मामले भी जल्दी से पारित हो सकते हैं। हालांकि बहरहाल स्थायी तब्लीग़ के लिए यह उपदेश जो हैं उन्हें तब्लीग़ के विभाग की तरफ से जानी चाहिए और फिर इस पर अनुकरण हो और फिर बातें इस शैली पर आधारित होनी चाहिए जो कि हिक्मत के अर्थ में समझाया गया है। इन में अहदेदारों को शामिल होना चाहिए और पुराने रहने वाले लोगों को भी शामिल होना चाहिए। सिर्फ यह नहीं कि असाइलम वालों के लिए मैंने कह दिया तो वही शामिल होंगे। दाइयान ख़सूसी को भी केवल नाम के दाइयान ख़सूसी बन कर नहीं बल्कि अधिक समय देकर इस तब्लीग़ के मैदान में आना चाहिए। दुनिया के जो हालात हैं इन को अब हमें खुल कर बताना चाहिए कि यह हालात तुम्हारे दुनियादारी में डूबने के कारण से पैदा हो रहे हैं अल्लाह तआला की नाराज़गी के कारण से पैदा है रहे हैं इसलिए एक ही रास्ता ही कि अल्लाह तआला की तरफ आओ और सच्चे धर्म की तलाश करो। "मौऊज़तुन हुस्ना" का जो आदेश है अब हिक्मत से तब्लीग़ के अर्थों में भी आ गया अर्थात नर्मी और दिल पर प्रभाव डालने वाले अन्दाज़ में तब्लीग़ की जाए।

अत: अल्लाह तआला ने हिक्मत और अच्छी नसीहत और ठोस दलील के साथ तब्लीग़ का जो आदेश दिया है इस के अनुसार चलना हमारा काम है इस के नतीजे अल्लाह तआला ने फरमाया कि मैंने पैदा करने हैं किस ने गुमराही में भटकते रहना है और किस ने हिदायत पानी है ये बातें अल्लाह तआला के ज्ञान में हैं। एक अन्य स्थान में यह भी फरमाया कि तुम ज़बरदस्ती किसी को हिदायत नहीं दे सकते। हां, तुम्हारा काम तब्लीग़ करना है। संदेश को व्यक्त करना है सच्चाई का संदेश दुनिया के सभी लोगों को देना है। इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षाएं दूसरों पर प्रकट करनी हैं वे करते चलो जाओ। इंसान भविष्य का जानने वाला नहीं है कि कहे कि बजाय समय नष्ट करने के मैं उस के पास जाकर ही सच्चाई का सन्देश पहुंचाओं जिस पर प्रभाव होना है। यह तो इंसान को नहीं पता कि किस पर प्रभाव होना है। अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम्हे यह ज्ञान नहीं दिया गया कि किस पर असर पड़ेगा और किस पर नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला की इस आयत के अनुसार हम नतीजे के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं कि क्यों इस के सकारात्मक परिणाम नहीं निकले।? क्यों शत प्रतिशत लोग हमारे संदेश से प्रभावित हो कर इस्लाम को स्वीकार करने वाले नहीं बने।? हमारे से यदि पूछा जएगा तो केवल इतना जो अल्लाह तआला ने हम से पूछना है कि क्या हमें ने सन्देश पहुंचा दिया है? या फिर क्यों हम ने अपना तब्लीग़ का फर्ज़ अदा नहीं किया है? और अल्लाह के मार्गदर्शन का पालन नहीं किया। किस ने मार्गदर्शन पाना है और किस ने मार्गदर्शन नहीं पाना है, यह केवल अल्लाह के ज्ञान में है यदि हम अपने कर्तव्य को पूरा कर रहे हैं तो मरने के बाद दुनिया कम से कम अल्लाह तआला को यह नहीं कह सकती कि हमें इस्लाम का संदेश नहीं मिला था तो इस में हमारी ग़लती क्या है।

कुछ लोग संदेश सुनते हैं, समझते हैं लेकिन फिर दुर्भाग्य से कोई रोक उन के आड़े आ जाती है और वे स्वीकार नहीं करते हैं। सिर्फ दो दिन पहले, यूरोप के एक देश के मुबल्लिग़ ने मुझे लिखा था कि अमुक अमुक लोग जो आप को मिले थे। जर्मनी में जलसा सालाना में शामिल हुए थे तब्लीग़ और पूरे परिवेश का उन पर बहुत अच्छा प्रभाव था। कई बार बैअत करने का उन्होंने इरादा किया फिर कोई रोक आड़े आ जाती है। अब यह तो अल्लाह तआला को पता है कि इस को कबूलियत की तौफीक मिलनी है या नहीं लेकिन हम ने बहर हाल अपना कर्तव्य पूरा कर दिया और उसे इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं से परिचित करवा दिया।

फिर तब्लीग़ के बारे में यह बात भी लोग पूछते हैं कि तब्लीग़ कर के कितने लोगों को तुम ने अहमदी बना लिया और यह भी कहते हैं कि ख़ुद मुसलमान तुम्हें मुसलमान नहीं समझते और फिर यह भी की कितना समय लगेगा इस तरह से इस्लाम को फैलाने में जिस तरह तुम लोग तब्लीग़ कर रहे हो और इस्लाम का पैग़ाम पुहंचा रहे हो।? और फिर यह भी साथ में स्वीकार करते हैं कि ज़ाहिर में तुम्हारी बात हिक्मत वाली और ज्ञान वाली है बहुत से लोग मुझ से भी पूछते हैं और अलग-अलग जगहों से पूछते हैं। यहां तक कि अभी एक पत्रकार ने जर्मनी की यात्रा में पूछा तो यही उत्तर हमारा होता है कि हमें तब्लीग़ का संदेश पुंहचाने का आदेश दिया गया है। हम इस से पीछे हटने वाले नहीं हैं और न हम ने इस से पीछे हटना है। हम अपना काम किए जाएंगे किस ने हिदायत पानी है और किस ने नहीं, वह तो अल्लाह तआला को पता है हमारे ज़िम्मे जो काम है वह हम ने करना है लेकिन साथ ही यह भी अल्लाह तआला का वादा है कि अल्लाह तआला और उस के रसूल विजयी होंगे। इन्शा अल्लाह। इसलिए हम इस उम्मीद पर कायम हैं कि इन्शा अल्लाह एक दिन हमारी अधिकता होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस आयत की व्याख्या में जो मैंने तिलावत की थी,कुछ स्थानों पर उपदेश फरमाए हैं। अपने बारे में बताते हुए, कि कैसे कई बार इस्लाम के विरोधियों ने आप की भावनाओं को गुस्सा में लाने की कोशिश की लेकिन इसके बावजूद आप ने इस आयत पर अनुकरण करते हुए किस प्रकार अमन को बर्बाद होने और झगड़े को बढ़ाने से रोकने के लिए अपना रवैया

दिखाया। अत: आप अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि

"ख़ुदा जानते है कि कभी हम ने जवाब के समय नर्मी और धीमेपन को नहीं छोड़ा।" (अर्थात यह कभी ऐसा नहीं हुआ है कि हम ने नर्मी और नर्म भाषा को छोड़ा हो) "और हमेशा नर्मी और नर्म शब्दों से काम लिया है।" फरमाया कि "इस हालत के कभी-कभी विरोधियों की तरफ से बहुत कठिन और उपद्रव फैलाने वाली लेखनी को पाकर कुछ कठोरता इस लिए अपनाई गई है" (कभी-कभी कठोरता अपनाई गई है क्योंकि विरोधयिों के बुरे उलमा हैं या जो बुराई में बढ़ने वाले लीडर हैं जो जन साधारण को भड़काते हैं इसलिए कठोरता इन्हीं के जवाबों में है। जो लेखनी में उन्होंने लिखा है इसी तरह की कठोरता की तहरीरें लिखी गईं।) "ताकि क़ौम इस प्रकार से अपना बदला पाकर अपने जोश को दबाए रखे।" (और यह भी इसलिए कि अगर मुसलमानों के विरुद्ध है तो कठोरता से यही जवाब दिया जा सकता है जो दे दिया और इस से अधिक जोश दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं है और क्रूरता की हालत में आने की ज़रूरत नहीं है ताकि दंगा फसाद हो।) फरमाया "और यह कठोरता न किसी नफ्सानी जोश से न किसी भड़काने से केवल आयत

وَ جَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ

(अन्नहल 126)का उपयोग करके केवल हिक्मत के अधीन धारण की गई है और इस समय कई बार यह कठोरता भी करनी पड़ती है तो वह भी इस आयत के नीचे आता है ताकि हिक्मत के तौर पर इसे प्रयोग किया गया कि एसी बात करो जो उचित हो यथा स्थान हो और उचित समय पर की गई हो इस से उस समय विरोधी को इसी प्रकार का उत्तर देना ज़रूरी है इसलिए कई बार कठोरता भी हो जाती है परन्तु प्राय नर्मी ही दिखाना है फरमाया कि इस आयत पर कार्य कर के एक हिक्मत के तौर पर प्रयोग में लाई गई है।"और वह भी उस समय जब विरोद्धियों के अपमान और उपहास और कटु भाषा(बदतमीज़ी) चरम तक पहुंच गई और हमारे सय्यद और मौला तथा सवरि कायनात के बारे में इस प्रकार के गंदे और उपद्रव वाले शब्द इन लोगों ने प्रयोग किए कि करीब था कि इन से फसाद पैदा हो तो उस समय हम ने इस रणनीति को प्रयोग किया।

(अल्बलाग़ (फरियादे दर्द) रूहानी खज़ायन भाग 13 पृष्ठ 385)

अत: जहां ऐसी स्थिति हो, वहां जादिलहुम बिल्लती हिया अहसन का अर्थ बन जाता है कि थोड़ा सा कठोरता से इस हिक्मत पर अनुकरण करते हुए जो दूसरा प्रयोग कर रहा है जवाब दिया जाए। अत: असल उद्देश्य यह है ताकि उपद्रव तथा दंगा दूर हो और सन्देश को सहीह तरीके से पहुंचाना भी ज़रूरी है। आप ने कभी वह रास्ता धारण नहीं किया जो विरोद्धियों ने धारण किया था इस के स्थान पर आप ने यह भी कहा कि हुकूमत और कानून की पाबन्दी ज़रूरी है और फसाद फैलने से रोकने के लिए दलीलों से ही आप ने बात की और कानून की मदद ली और बहरहाल जहां ग़ैरत दिखाना ज़रूरी है वहां आप ने ग़ैरत भी दिखाई।

एक और स्थान पर आप फरमाते हैं कि "आयत जादिल हुम बिल्लती का यह उद्देश्य नहीं है कि हम इतनी नर्मी करें कि चापलूसी कर के घटना के विरुद्ध बात को सच मान लें। क्या हम इस आदमी को जो ख़ुदा होने का दावा करे और हमारे रसूल को पेशगोई के रूप में कज़्ज़ाब बताए।" (नऊज़ बिल्लाह) "और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का नाम डाकू रखे सच्चा कह सकता हैं क्या ऐसा करना मजादला हस्ना है? हरगिज़ नहीं बल्कि मुनाफिकाना सीरत और बेईमानी का एक अंश है।"

(तर्याकुल कुलूब रूहानी खज़ायन भाग 15 पृष्ठ 305 हाशिया)

इसलिए इन बातों के बीच भी अन्तर हमेशा इस लिए अपने सामने रखना चाहिए कि चापलूसी न हो जाए कि हम ने तब्लीग़ करनी है। दूसरे को बात सुनानी है तो इस सीमा तक हम न चलें जाएं कि ग़ैरत ही बिल्कुल समाप्त हो जाए हां लड़ाई झगड़ा न करो और शरारत न करो, लेकिन कई बार उन्हीं के शब्दों को उन पर उलटाना भी पड़ता है। अत: जहां सीमा से अधिक विरोधी आरोप में बढ़ जाएं या उन की बातें ऐसी हों जो बहुत गन्दी और अपशब्द हों वहां कई बार फित्ने को रोकने के लिए जवाब देना पड़ता है इसी तरह आपने यह भी फरमाया कि नर्मी का हरगिज़ यह मतलब नहीं है जैसा कि मैंने पहले कहा था कि चापलूसी कर के इतना डर जाओ हां में हां मिलाने लग जाओ और वास्तविकता से हट कर जो बात है उस को मानने लग जाओ। हिक्मत बहरहाल बहुत ज़रूरी है। नर्म भाषा और चरित्र भी ज़रूरी हैं लेकिन ग़लत बात को ग़लत कहना ज़रूरी है।

अत: इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि हिक्मत का अर्थ बुज़दिली नहीं है या अपने निकट लाने के लिए ग़लत बात को सही कहना नहीं है। जैसे आज कल दुनियादारों ने आज़ादी के नाम पर ऐसे कानून बना दिए हैं जिन की शरीयत बिल्कुल आज्ञा नहीं देती और अगर इन के ख़िलाफ कोई बात करे तो कहते हैं अहमदी भी अपने आप को कट्टरता से दूर रहने वाला कहते हैं और इस के विरुद्ध बातें करते हैं। ज़ाहिर करते हैं कि हम कट्टर नहीं हैं लेकिन कुछ मामलों में यह भी कट्टर हैं और उदाहरण यह देते हैं कि जैसे औरतों से हाथ मिलाने का मामला है या होमोसैक्सुअलटी का मामला है। अभी जर्मनी में मुझ से कुछ ने सवाल किए और मेरे जवाब पर कुछ ने नकारात्मक टिप्पणी भी हमारे खिलाफ की लेकिन बहुमत को समझ आ गई कि क्या सच है। हमें लड़ने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन जो कुछ भी ग़लत है हमें ग़लत कहना है।

पिछले दिनों यहां यू.के के एक राजनीतिक पार्टी के सदस्य जिनके बारे में प्रसिद्ध हो गया था कि वह पार्टी नेता बनने के लिए खड़े होंगे उन्होंने घोषणा की कि वह पार्टी नेता बनने के लिए खड़े नहीं हो सकते क्योंकि एक तो वह होमोसैक्सुअलटी के ख़िलाफ हैं और दूसरा abortion के खिलाफ हैं और यह दोनों बातें ऐसी हैं कि उनके ख़िलाफ उन्होंने कहा कि हमारे समाज में सुनने की क्षमता ही नहीं है जहां तक होमोसैक्सुअलटी का प्रश्न है कुर्आन भी और बाइबल दोनें किताबों में भी राष्ट्रीय रूप में बुराई करने वालों को अल्लाह तआला की तरफ से सज़ा का उल्लेख है, लेकिन abortion कुछ परिस्थितियों में, हम तो जायज़ समझते हैं बहरहाल इन का अपना सिद्धांत था कि वह नहीं समझते।

इसी तरह एक और राजनीतिक पार्टी के नेता ने कुछ महीने हुए अपनी पार्टी के नेतृत्व से इसलिए इस्तीफा दे दिया कि वह होमोसैक्सुअलटी के ख़िलाफ थे और उन्होंने कहा कि इसलिए मैं अपने विश्वास और राजनीति के बीच विभाजित हो कर रह गया हूँ। यही कारण है कि मैं अपने विश्वास को बचाने के लिए पार्टी नेतृत्व से अलग हो जाऊं। अत: अगर ये लोग जो दुनियादार हैं और जिनका धर्म भी अपनी असली हालत में स्थापित नहीं है। अपने सांसारिक मामलों को धर्म के लिए कुर्बान कर रहे हैं और चापलूसी नहीं दिखाते, कायरता नहीं दिखाते तो हम जो अंतिम और हमेशा कायम रहने वाली शरीयत को मानने वाले हैं, कितना मजबूत विश्वास होना चाहिए और अपने सांसारिक संबंधों और तब्लीग़ के संबंध में भी हिक्मत के साथ, ठोस दलील के साथ इन बातों को अस्वीकार करना चाहिए। न ही अपने सांसारिक हितों के लिए इन चीजों से डरना चाहिए। न ही इसलिए इन की हां में हां मिलानी चाहिए कि इन से संपर्क समाप्त हो जाएंगे। अगर हिक्मत से बात की जाए तो कोई सम्पर्क खत्म नहीं होते और फिर दूसरे अल्लाह तआला ने फरमाया दिया है पहले भी उल्लेख हो चुका है कि निर्देश पाने वाले कौन हैं यह मुझे पता है। इसलिए जिस को अल्लाह तआला ने हिदायत देनी है उसका दिल भी खोल देगा। उहदेदारों को इस तरफ विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए, यह इन में मैंने देखा है कि कई बार बुज़दिली प्रकट हो जाती है। विरोध की कोई परवाह नहीं करनी चाहिए, विरोध तो तब्लीग़ के मार्ग खोलता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि "जितना ज़ोर से झूठ सच्चाई का विरोध करता है उतनी ही सच्चाई की शक्ति और ताकत तेज़ होती है।" फरमाया "ज़मींदारों में भी यह बात मशहूर है कि जितना जेठ हाड़(दो महीनों के नाम हैं। अनुवादक)तपता है उतना ही सावन में बारिश अधिक होती है।" (यानी मई जून में जितनी गर्मी अधिक होती है इतनी जुलाई अगस्त सितंबर में बरसात के मौसम में मानसून आ जाता है तो बरसात भी और बारिश भी अधिक होती हैं।) फरमाया, "यह एक प्राकृतिक बात है जितना कि सच्चाई का विरोद्ध होता है उतना ही वह चमकती है और अपनी शौकत दिखाती है। फरमाया कि "हम ने ख़ुज आज़मा कर देखा है जहां-जहां हमारे बारे में अधिक शोर हुआ है, वहाँ एक जमाअत तैयार हो गई है और जहां लोग इस बात को सुनकर चुप हो जाते हैं वहाँ अधिक तरक्की नहीं होती।"

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 310-311 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

यह नज़ारे हमें आज भी नज़र आते हैं । पिछले दिनों जर्मनी में अल्जीरिया से

आए हुए वहां के एक बड़े प्रसिद्ध ग़ैर जमाअत से मेरी मुलाकात हुई। मिलने आए थे कहने लगे कि इस समय आप की जमाअत वहाँ बड़ी परेशानी से गुज़र रही है। यह तो सही है लेकिन जमाअत का परिचय और तब्लीग़ इस देश के लगभग सभी भागों में विरोध के कारण हो चुका है और लोग जमाअत को जानने लग गए हैं। यह कहा जा सकता है कि संभवत: यह जो इतना परिचय हो रहा है वह दस साल में भी नहीं किया जा सकता है, जितना कि विरोद्ध के कारण हुआ है। तो वहां के अहमदी भी लिखते हैं कि थोड़े से हालत अच्छे हुए तो वहां लोग अहमदी होने के लिए तैय्यार बैठे हैं अत: विरोद्ध और दुनिया वालों का किसी प्रकार का भी भय नहीं होना चाहिए लेकिन साथ ही हिक्मत भी आवश्यक है। तब्लीग़ के लिए यह भी महत्वपूर्ण है कि मनुष्य के शब्दों और कार्यों में समरूपता हो। जो कहते हैं,इस पर अनुकरण करने वाले भी हों, हिक्मत की बातें भी मुंह से तभी बाहर निकलती हैं और दूसरों पर प्रभाव डालती हैं जब कथनी और करनी एक हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस ओर ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर फरमाते हैं कि

"कई मौलवी और उलेमा कहला कर मैम्बरों पर चढ़ कर अपने आप को नायब रसूल और अंबिया का वारिस करार देकर उपदेश देते फिरते हैं। कहते हैं कि अहंकार न करो, बुराइयों से सावधान रहो, परन्तु जो उन के अपने कर्म हैं और जो उन की करतूतें हैं वे ख़ुद करते हैं, उन का अंदाज़ा इस से कर लो कि इन बातों का असर तुम्हारे दिल में कहां तक होता है।" (प्रत्येक तब्लीग़ करने वालों की बातों का असर भी उस समय होगा जब वह अपने जब वह अपने कथन और कर्म में बराबर होगा।) फरमाया कि, "अगर इस प्रकार के लोग व्यावहारिक ताकत भी रखते और कहने से पहले ख़ुद कहते तो कुरआन में "لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ(अस्सफ 2)" कहने की क्या ज़रूरत पड़ती यह आयत ही बताती है कि दुनिया में कह कर न करने वाले मौजूद थे और हैं और रहेंगे।" फरमाया "तुम मेरी बात सुन रखो और याद रखो कि अगर इंसान की बात सच्चे दिल से न हो और कर्म की ताकत इस में न हो तो वह प्रभाव नहीं डालती इसी से तो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बड़ी सच्चाई प्रमाणित होती है क्योंकि जो सफलता और दिलों पर प्रभाव डालना उनके हिस्से में आया उसका कोई उदाहरण मनुष्यों के इतिहास में नहीं मिलता है और यह सब इसलिए हुआ कि आप की कथनी और करनी में पूरी समरूपता थी।"

(मल्फूज़ात भाग1 पृष्ठ 67-68 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर आप ने फरमाया कि "याद रखो"(हमें भी नसीहत फरमा दी) "कि केवल शब्दाडंबर और मौखिक बात काम नहीं आ सकते। जब तक कि कर्म न हों और बातें अल्लाह तआला के निकट कुछ भी महत्त्व नहीं रखतीं अत: ख़ुदा तआला ने फरमाया

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (अस्सफ 4)

फिर आप फरमाते हैं कि मोमिन को कपट धारण नहीं करना चाहिए, वह बुज़िदली और निफाक से हमेशा दूर होता है। हमेशा अपनी कथनी और कर्म को ठीक रखो और उस में अनुकूलता दिखाओ जैसा कि सहाबा ने अपने जीवन में दिखाया। तुम भी उन के नक्शे कदम पर चल कर अपनी सच्चाई और दृढ़ता का नमूना दिखाओ

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 67-68 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर एक स्थान पर नसीहत करते हुए आप फरमाते हैं कि "इस्लाम की हिफाज़त और सच्चाई के ज़ाहिर करने के लिए सब से पहले तो वह पहलु है कि तुम सच्चे मुसलमान का नमूना बन कर दिखाओ और दूसरा पक्ष यह है कि इस की ख़ूबियां और कमाल दुनिया में फैलाओ

(मल्फूज़ात भाग 8 पृष्ठ 323 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

पहले नमूना बना फिर इस्लाम की तब्लीग़ करो इस के कमाल दुनिया में फैलाओ। अत: तब्लीग़ के लिए भी पहले अपनी अवस्थाओं में पवित्र परिवर्तन पैदा करने की ज़रूरत है एक सच्चे मुसलमान का नमूना जब इंसान बन जाए तो सवाल ही नहीं है कि लोगों का ध्यान पैदा न हो। लोग नमूना देख कर ही ध्यान देते हैं और इस तरह नियमित तब्लीग़ से पहले तब्लीग़ के रास्ते खुलने शुरु हो जाते हैं। अल्लाह तआला हमें इस के अनुसार काम करने की तौफीक प्रदान करे। आमीन।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

शेष पृष्ठ 7 पर

सकती।

मियां मे'राजुद्दीन साहिब लाहौर से लिखते हैं कि मौलवी **ज़ैनुल आबिदीन** जो मौलवी फ़ाज़िल और मुंशी फ़ाज़िल की परीक्षाएं पास कर चुका था तथा मौलवी ग़ुलाम रसूल क़िले वाले के परिजनों में से था तथा धार्मिक शिक्षा को पूर्ण कर चुका था तथा अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर का एक प्रिय शिक्षक था। उसने हुज़ूर की सच्चाई के बारे में मौलवी मुहम्मद अली सियालकोटी से कश्मीरी बाज़ार में एक दूकान पर खड़े होकर मुबाहला किया। फिर कुछ दिनों के पश्चात् प्लेग ग्रस्त होकर मृत्यु का शिकार हो गया, न केवल वह अपितु उसकी पत्नी भी प्लेग का शिकार हो गई तथा उसका दामाद भी जो एकाउन्टेन्ट जनरल में कार्यरत था प्लेग का शिकार हुआ। इसी प्रकार उस के घर के सत्रह लोग मुबाहले के पश्चात् प्लेग का शिकार हो गए।

यह विचित्र बात है। क्या कोई इस रहस्य को समझ सकता है कि उन लोगों के विचार में झूठा, झूठ घड़ने वाला और दज्जाल तो मैं ठहरा परन्तु मुबाहले के समय में यही लोग मरते हैं। क्या (हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं) ख़ुदा से भी कोई बोध भ्रम हो जाता है ? ऐसे सदाचारी लोगों पर यह ख़ुदा का अज़ाब क्यों आता है, कि मृत्यु भी होती है और फिर अपमान और बदनामी भी। मियां मे'राजुद्दीन लिखते हैं कि इसी प्रकार करीम बख़्श नामक व्यक्ति लाहौर में एक ठेकेदार था वह हुज़ूर के पक्ष में बड़ी असभ्यता और धृष्टता किया करता था और प्राय: करता ही रहता था। मैंने कई बार उसे समझाया परन्तु वह नहीं रुका, अन्तत: युवावस्था में ही मृत्यु का शिकार हो गया।

सय्यद हामिद शाह साहिब सियालकोटी लिखते हैं कि हाफ़िज़ सुल्तान सियालकोटी हुज़ूर का कट्टर विरोधी था। यह वही व्यक्ति था जिसने इरादा किया था कि सियालकोट में आप की सवारी गुज़रने पर आप पर राख डाले। अन्तत: वह भयंकर प्लेग से इसी 1906 ई. में मृत्यु का शिकार हुआ तथा उसके घर के नौ या दस लोग भी प्लेग से मरे। इसी प्रकार सियालकोट शहर में यह बात सर्वविदित है कि हकीम मुहम्मद शफ़ी जो बैत करके मुर्तद हो गया था जिसने "मदरसा अलक़ुर्आन" की नींव रखी थी आप का कट्टर विरोधी था। यह अभागा अपनी कामेच्छाओं के कारण बैअत पर क़ायम न रह सका तथा सियालकोट के मुहल्ला लोहारां के लोग जो कट्टर विरोधी थे। शत्रुता एवं विरोध में उनका भागीदार हो गया। अन्तत: वह भी प्लेग का शिकार हुआ तथा उसकी पत्नी और मां तथा उसका भाई सब एक-एक करके प्लेग से मरे तथा उसके मदरसे की जो लोग सहायता करते थे वे भी मृत्यु का शिकार हुए।

इसी प्रकार मिर्ज़ा सरदार बेग सियालकोटी जो अपने अपशब्दों और अपनी दुष्टता में बहुत बढ़ गया था तथा हर समय उपहास एवं उपहास उसका कार्य था तथा प्रत्येक बात व्यंग और कटाक्ष से करता था वह भी भयंकर प्लेग में ग्रसित होकर मरा। एक दिन उसने धृष्टतापूर्वक जमाअत के एक व्यक्ति को कहा कि क्यों प्लेग, प्लेग करते हो हम तो तब जानें कि हमें प्लेग हो। अत: इस बात के दो दिन बात प्लेग से मर गया।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 223-226)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -13)

☆ "अल्ऐन " मोबाइल आई क्लिनिक का उद्घाटन, यह मोबाइल आई क्लिनिक बेनिन में इस्तेमाल की जाएगा ह्योमेन्टी फर्सट जर्मनी के अधीन अफ्रीका में हाथ के पंप और नल लगाने के कार्यक्रम के सिलसिले में खरीदी गई Boring Rig और बांजल (गाम्बिया) और टोगो (Togo) के लिए खरीदी गई एमब्यूलैंसज़ का निरीक्षण

☆ वाकफीन नौ ख़ुद्दाम की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के साथ कक्षा

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

22 अप्रैल 2017 (दिन शनिवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बज कर पंद्रह मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अपनी आवास पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ्तर के मामलों में व्यस्तता रही।

'ऐन' मोबाइल आई क्लिनिक का उद्घाटन

कार्यक्रम के अनुसार दस बजकर पच्चीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान से बाहर आए और " अल्ऐन मोबाइल आई क्लिनिक " (Al-Ain Mobile Eye Clinic) का निरीक्षण किया और इस के बाद उसके एक भाग में लगी पट्टिका का अनावरण फ़रमाया और इसका उद्घाटन किया और दुआ करवाई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ह्योमेनेटी फर्सट जर्मनी को एक मोबाइल आई क्लिनिक तैयार करने का काम सौंपा था। ह्योमेनेटी फर्सट ने एक ख़ाली ट्रेलर 11 हज़ार यूरो में खरीदा। उसके बाद इस ट्रेलर में सभी आवश्यक चिकित्सा उपकरण स्थापित किए। इस काम का आरम्भ 20 दिसंबर 2016 ई को ट्रक ट्रेलर खरीद किया गया और चार महीने की कोशिश के बाद आई क्लिनिक पूरी तरह तैयार कर ली गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने इस मोबाइल आई क्लिनिक को 'अल्ऐन' नाम अता फरमाया। अल्लाह तआला की कृपा से 30 रज़ाकारों ने इस सेवा में दिन रात काम किया और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह की तरफ से दिए गए काम को पूर्ण किया।

इस मोबाइल क्लिनिक में चार कमरे बनाए गए हैं। एक कमरा मरीज़ो को देखने के लिए बनाया गया है जिस आंख से संबंधित किसी भी रोग का इलाज किया जा सकता है। एक कमरा वर्कशॉप है। इसमें हर प्रकार के चश्मा मौके पर ही बनाए जा सकते हैं और ज़रूरतमंद को उसी समय दिया जा सकता है। इस ट्रेलर का आकर्षण ऑपरेशन थिएटर है, जहां सबसे अच्छे और साफ-सुथरे माहौल में आंख का आपरेशन करने की सुविधा भी मौजूद है। खासकर मोतिया बिन्द के आपरेशन की सुविधा है। और यह सब संचालन उपकरण जर्मनी में किए गए संचालन मानकों के अनुसार हैं। इस ऑपरेशन थिएटर के साथ ही मल्टी फंक्शनल कमरा है। इसमें पानी और सिंक उपलब्ध है और रोगी के लिए बेड की सुविधा भी है। यहाँ पर आपरेशन से पहले रोगी तैयार किया जाएगा, जैसे anaesthesia आदि के लिए। यह स्टाफ के लिए भी changing कमरा के रूप में उपयोग होगा, जहां ऑपरेशन के लिए स्टाफ तैयारी करेगा। यह कमरा रोगियों के लिए pre-operative और post-operative केयर रूम के रूप में भी उपयोग होगा।

इस मोबाइल क्लिनिक में पूरी आई साइट परीक्षण की सुविधा मौजूद है। यह परीक्षण manually भी हो सकेगा और ऑटोमैटिक भी हो सकेगा और इसके लिए auto refractor meter भी स्थापित किया गया है।

कोर्निया के परीक्षण करने की सुविधा भी मौजूद है। इसके अतिरिक्त मोतिया बिन्द, रोगी देखना और ऑपरेशन के बाद की care, आंख के घाव का इलाज और हर प्रकार के लेंस तैयार करने की सुविधा भी क्लिनिक में उपलब्ध की गई है।

इस मोबाइल क्लिनिक की तैयारी में कुल 55 हज़ार यूरो खर्च हुए हैं। यह मोबाइल क्लिनिक मानवता की सेवा करने के लिए अफ्रीका के देश बेनिन भिजवाया जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने यह इच्छा जताई थी कि ह्योमेनेटी फर्सट जर्मनी के पास अपनी boring rig होनी चाहिए ताकि अफ्रीका में जो हाथ पंप और नल लगाने का कार्यक्रम जारी है इसमें अधिक सुविधा पैदा हो।

ह्योमेनेटी फर्सट जर्मनी को Mercedes Benz Unimog Boring Rig खरीदने की तौफीक मिली है। यह मशीन पूरी तरह hydraulic है और 150 मीटर गहराई तक ड्रिल सकती है। इसकी एक और ख़ूबी यह है कि यह न तो बहुत छोटी है और न ही बहुत बड़ी है। इसलिए हर स्थान पर आसानी से पहुंचाई जा सकती है।

इस बोरिंग रिंग के साथ विशेष उपकरण भी हैं, जैसे विभिन्न प्रकार के पाइप, जिनकी लंबाई कुल 150 मीटर बनती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न drills हैं जो कि विभिन्न प्रकार की भूमि में इस्तेमाल किए जा सकते हैं। यह बोरिंग रिंग ह्योमेनेटी फर्सट जर्मनी ने 32 हज़ार यूरो में खरीदा है जो अफ्रीका के देशों में नल लगाने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इसका भी निरीक्षण किया और इसके उपयोग के संदर्भ में विभिन्न मामलों के बारे में पूछा।

ह्योमेनेटी फर्सट जर्मनी को 2 एमबोलैंसज़ खरीदने की भी तौफीक मिली है। उनमें से एक एम्बुलेंस बांजल, गैम्बिया भिजवाई जाएगी और दूसरी एम्बुलेंस टोगो (Togo) भिजवाई जाएगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने उन दोनों एम्बुलेंसों का भी निरीक्षण किया।

आज वाक़फीन नौ (ख़ुद्दाम) और वाकफ़ात नौ (लजना) के हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ दो अलग अलग कार्यक्रम रखे गए थे। पहला कार्यक्रम वाक़फीन नौ (ख़ुद्दाम) का था और उसका प्रबंधन मस्जिद से जुड़े हॉल में किया गया था।

वाक़फीन नौ ख़ुद्दाम की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के साथ कक्षा

साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ हॉल में आए और वाक़फीन नौ ख़ुद्दाम के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ । प्रोग्राम का आरम्भ कुरआन की तिलावत से हुआ जो प्रिय हम्माद अहमद ने की और इसका उर्दू अनुवाद प्रिय तौकीर अहमद सुहेल ने पेश किया।

इस के बाद प्रिय सआदत अहमद ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस अरबी में प्रस्तुत की और प्रिय अनसर अफज़ल ने इस हदीस का निम्नलिखित उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया।

हदीस नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

हज़रत सहल रज़ि अल्लाह वर्णन करते हैं कि एक व्यक्ति आँ हज़रत स की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! मुझे कोई ऐसा काम बताइए कि जब मैं यह करूं तो अल्लाह तआला मुझ से मुहब्बत करने लगे

और बाकी लोग भी मुझ से मुहब्बत करने लगें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: दुनिया से बे-रग़बत और बेनियाज़ हो जाओ, अल्लाह तआला तुझ से मुहब्बत करने लगेगा। जो कुछ लोगों के पास है उसकी इच्छा छोड़ दो, लोग तुझ से मुहब्बत करने लग जाएंगे।

(इब्ने माजा बाब अज़ज़ुहद फिद्दुनिया हदीकतुस्सालेहीन हदीस नंबर 803 पृष्ठ नंबर 640)

इसके बाद प्रिय इमरान ज़का साहिब ने हजरत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निम्नलिखित उद्धरण प्रस्तुत किए।

मल्फ़ूज़ात हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: " ख़ुदा तआला के बन्दे कौन हैं। ये वही हैं जो अपने जीवन को जो अल्लाह तआला ने उन्हें दिया है अल्लाह तआला की राह में वक्फ (समर्पित) कर देते हैं और अपनी जान को ख़ुदा की राह में कुर्बान करना, अपने माल को उस के मार्ग में खर्च करना उसकी कृपा और अपना सौभाग्य समझते हैं लेकिन जो लोग दुनिया की संपत्ति और जायदाद को अपना मूल गंतव्य बना लेते हैं वह एक सोई हुई नज़र से धर्म को देखते हैं लेकिन वास्तविक मोमिन और सादिक मोमिन का यह काम नहीं है। सच्चा इस्लाम यही है कि अल्लाह तआला की राह में अपनी सारी शक्तियों और ताकतों को सारी ज़िन्दगी वक्फ कर दे ताकि वे हयाते तैयबा का वारिस हो। इसलिए अल्लाह तआला इस अल्लाह के लिए वक्फ की तरफ इशारा करते हुए कहता है कि

مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗۤ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۪ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ

(अलबक़रा: 113) इस जगह اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰه के अर्थ यही हैं कि एक फना होने और विनम्रता का लिबास पहनकर अल्लाह तआला के आस्ताना पर गिरे और अपनी जान, माल, आबरू, अत: जो कुछ भी उसके पास है ख़ुदा को समर्पित करे और दुनिया और उसकी सारी चीज़ें उसके सेवक बना दे। "

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 364)

इसी प्रकार फ़रमाया " चाहिए कि सहाबा के जीवन को देखो वह जीवन से प्यार नहीं करते थे हर समय मरने के लिए तैयार थे। बैअत के अर्थ हैं अपने आप को बेच देना। जब मनुष्य जीवन को वक्फ कर चुका तो दुनिया के उल्लेख को बीच में क्यों लाता है।

" (मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 504)

इसी प्रकार फरमाया: " सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के सम्बन्ध भी तो आख़िर दुनिया से थे ही। संपत्तियां थीं, माल था, दौलत थी, लेकिन उनके जीवन में कितना इंकलाब आया कि सब के सब एक बार ही हट गए और तय कर लिया कि قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَ نُسُكِيْ وَ مَحْيَايَ وَ مَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ हमारा सब कुछ अल्लाह तआला ही के लिए है। अगर इस तरह के लोग हम में हों तो कौन सी आसमानी बरकत हम में बुज़ुर्ग है।"

(अल्हकम जिल्द 7 पृष्ठ 24, दिनांक 30 जून 1903 ई)

कलाम

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह

इस के बाद प्रिय हुनान अहमद बाजवा ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस का नीचे लिखा कलाम पेश किया।

दुनिया के काम बेशक करता रहूंगा मैं भी
लेकिन मैं जान-वो-दिल से उस यार का रहूंगा
बर्की ख़याल दिल में, सिर में रहेगा सौदा
उस यार को मैं भूलूं, इतना न महव होगा।
चमकोंगा मैं फलक पर, जैसे हो कोई तारा
भूलों को राह पे लावे, एसी मैं शमा होंगा।
सूरज की रोशनी भी मध्म हो जिस के आगे
ऐसा ही नूर हासिल उस नूर से करूंगा।
सारे उलूम का हां मनब्अ है ज़ात जिस की
उस से मैं इल्म लेकर दुनिया को आगे दूंगा।
जो कुछ कहूं ज़ुबां से नासिर वह कह दिखाऊं
हो रहम ए ख़ुदाया ता तेरे फज़ल पाओं।

अपने मन में, सिर में रहेगा सौदा इस यार मैं भूलों, इतना न महो हूँगा चमकों जाएगा में पैनल पर, जैसे हो कोई तारा भूलों रह पे लावे, ऐसी में शमा हूँ धूप भी मदहम हो जिसके आगे ऐसा ही नूर प्राप्त उस नूर से ज रों जाएगा सारे ज्ञान का हाँ माध्यम है जाति जो इससे ज्ञान लेकर दुनिया आगे दूँगा जो कुछ कहूँ ज़बां से नासिर वे कर दिखाऊँ हो दया ए ख़ुदाया! इसलिए तेरे फ़ज़्ल पैर

इसके बाद आदरणीय सय्यद हसनात अहमद साहिब (वक्फे नौ ख़ादिम) सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी ने "वाक़फीन नौ की जिम्मेदारियों " शीर्षक पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के उपदेश पर आधारित निम्नलिखित लेख प्रस्तुत किया।

वाक़फीन नौ की जिम्मेदारियां

प्यारे आक़ा! आज यहां इस कक्षा में ऐसे ख़िलाफत के ग़ुलाम वाक़फीन नौ मौजूद हैं जिन्होंने पंद्रह साल की उम्र के वक्फ के नवीकरण के बाद अपनी पढ़ाई के अंत या अंतिम चरणों में अपने को वक्फ के लिए पेश करते हुए फिर से वक्फ का नवीकरण किया है और अपने आप को समय के ख़लीफा के कदमों में पेश करते हुए इस बात का अहद करते हैं कि प्यारे आक़ा जहां भी हमें सेवा का मौका दें हम उसे अपनी ख़ुशनसीब समझेंगे। प्यारे आक़ा से दुआ का अनुरोध है कि ख़ुदा तआला हमारी इस कुर्बानी को सिर्फ अपने फज़ल से स्वीकार करे और हमें मक्बूल धर्म की सेवा की तौफ़ीक़ अता फरमाता चला जाए। आमीन।

प्यारे वाक़फीन नौ भाइयो! यह हमारी सौभाग्य है कि हमारे माता-पिता ने तहरीक वक्फे नौ की शुरुआत में ही हमें इस मुबारक तहरीक के लिए पेश किया और फिर हमारा प्रशिक्षण इस तरीके से किया कि आज हम अपने आप को समर्पित करने के लिए प्रस्तुत कर चुके हैं। फिर हम कितने भाग्यशाली हैं कि समय के ख़लीफ़ाओं ने हमारा कदम कदम पर मार्गदर्शन फ़रमाया, व्यावहारिक सेवा के लिए तैयार किया। सय्यदना व इमाम प्यारे आक़ा हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने एक बार एक संदेश में फरमाया,

"हर वक्फे नौ जो व्यावहारिक रूप से वक्फ के एक नियमित प्रणाली में शामिल है कि नहीं, अर्थात जमाअत के स्थायी कार्यकर्ता के रूप में काम करता है या नहीं, वे वक्फ ज़िन्दगी बहरहाल है और उसका हर कथना और कर्म वक्फ ज़िन्दगी के उच्च मानकों के अनुसार होना चाहिए जिस में सबसे बड़ी बात तक्वा है। यह हमेशा अपने मद्देनजर रखें कि हमें तक्वा पर बने रहना है और हर काम अल्लाह तआला को ख़ुश करने के लिए करना है .... खासकर के इस समाज में जहां स्वतंत्रता का युग है और स्वतंत्रता के नाम पर नैतिक पथभ्रष्टता हर जगह प्राय दिखती है। इसमें हम ने अपने आप को हर लिहाज से संभाल कर रखना है और एक नमूना स्थापित करना है ताकि अन्य युवा भी और बच्चे भी हमें देखकर हमसे नमूना प्राप्त करें। और इस तरह हम हर अहमदी बच्चे और युवा के लिए एक अच्छा नमूना बनते हुए उनके सुधार का सबब बनने वाले हैं। अत: इस बात को हमेशा याद रखें कि हम ने अपना जीवन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षाओं और उपदेशों के प्रकाश में वास्तविक इस्लामी नमूना के अनुसार गज़ारना है और यह तभी संभव होगा जब आप हमेशा ख़िलाफत से वफ़ा का संबंध रखेंगे और समय के ख़लीफा की प्रत्येक नसीहत पर भरपूर पालन करने की कोशिश करेंगे। अगर आप यह कर लें तो आप इस अहद को निभाने वाले बनेंगे जो आपने बतौर वक्फे नौ ख़ुदा तआला से किया या आपके माता पिता ने अपने जन्म से भी पहले आप को वक्फ कर दिया। "

(संदेश हुज़ूर अक़दस तिमाही पत्रिका इस्माइल, अंक 1 अप्रैल से जून 2012, पृष्ठ 5 से 6)

इसी तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने एक भाषण में एक वक्फ नौ के गुण बयान फरमाते हुए हमें बताया कि " हर वक्फ नौ की अपनी भी ज़िम्मेदारी है कि वह अपने दैनिक जीवन को इस रंग में ढाले जो एक ख़ुदा तआला के रास्ते में समर्पित व्यक्ति के सम्मान और गरिमा के अनुरूप हो। इसके लिए आवश्यक है कि आप कोशिश करते रहें कि आप को ख़ुदा तआला की नज़दीकी मिलती जाए और हर दिन जो गुज़रता है इसमें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में भी तरक्की करते चले जाएं। इसके साथ सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद से भी भरपूर वफा और ख़िलाफत से पूर्ण अनुसरण आपके जीवन का हिस्सा हो। जमाअत का निज़ाम आप की नज़र में और आप के जीवन में हर दूसरी चीज की तुलना में प्रिय और प्राथमिक होना चाहिए। केवल तब ही आप में वे गुण पैदा होंगे जिनसे आप सक्षम बनें कि वक्फे नौ की महान ज़िम्मेदारियों को अहसन रंग में पूरा कर सकें। जैसा कि पहले कह चुका हूँ आप को अपना जीवन इस तरह ढाल लेना चाहिए जिस की मांग इस्लाम की वास्तविक शिक्षा हमसे करती है। जब आप खड़े या बैठे हों या किसी महफ़िल में हों या कहीं चलते फिरते नज़र आएं आप का तरीका नुमाया रूप में अच्छा हो और

उच्च नैतिकता का परिचायक हो अन्यथा लोग आप पर उंगली उठाएंगे और कहेंगे कि वक्फ नौ की नैतिकता और चरित्र उच्च गुणवत्ता के नहीं हैं।"

(संबोधन सालाना इज्तिमा वाक़फीन नौ यू के 26 फ़रवरी 20 11 ई)

इसी प्रकार फरमाया: "हमेशा आप अपना वक्फे नौ का अहद याद रखें और याद रखें कि यह अहद ख़ुदा तआला से बांधा गया है जो कि ग़ैब का इल्म रखता है। उससे कुछ भी छुपा हुआ नहीं है। और वह आपके हर काम को देख रहा है। इसमें कुछ शक नहीं कि आप अल्लाह तआला की तरफ से पूछे जाएंगे और जो वादा आप ने किया है कि बारे में पूछे जाएंगे इसलिए यह एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी वाक़फीन नौ पर डाली गई है। इसलिए इस वादा को पूरा करने के लिए आप इसके महत्व और मूल अर्थ को समझना चाहिए। आप में से कई जल्द ही व्यावहारिक जीवन में कदम रखेंगे या रख चुके हैं और जमाअत के लिए काम करना शुरू करेंगे या पहले से ही शुरू कर चुके हैं। इसलिए आप को लिए यह आवश्यक है कि आप रोज़ाना अपनी समीक्षा करें और यह देखें कि क्या आप वास्तव में अपना कार्यकाल पूरा कर रहे हैं? क्या आप अल्लाह तआला के निकट हो रहे हैं? और तक्वा की राहों को मज़बूती से पकड़ रहे हैं कर रहे हैं? अगर इन सवालों का जवाब नहीं है तो जमाअत को आपके वक्फे नौ होने से कोई लाभ नहीं है। "

(संबोधन जलसा सालना वाक़फीन नौ यू.के 6 मई 2012 ई)

प्यारे भाइयो ! यह हमें महान सौभाग्य हासिल है कि हमारे आक़ा हज़रत ख़लीफतुल मसीह हमें अपने साथ कक्षा में शामिल होने का श्रेय देते हैं और हमें ऐसा निर्देश देते हैं जिन पर अनुकरण करके हम भविष्य की भारी ज़िम्मेदारियों को अदा करने में सक्षम हो सकते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने एक भाषण में ऐसी ही नसाईह फरमाते हुए कहा:

"इस समय इस्लाम हर दिशा से हमले किए जा रहे हैं और इस्लाम के विरोध में बहुत कुछ कहा और लिखा जा रहा है। इस मामले में आप को इस्लाम की रक्षा के लिए उठ खड़े होना चाहिए। प्रत्येक आदमी को इस्लामी की शिक्षाओं की रक्षा को लेकर भरपूर भूमिका निभानी चाहिए। लेकिन एक वक्फ नौ का चरित्र तो दूसरों से बहुत बढ़कर होनी चाहिए। इसकी वजह यह है कि वाक़फीन नौ बच्चों के माता-पिता ने यह वादा किया था कि उनके बच्चे के जीवन का हर पल इस्लाम सेवा के लिए वक्फ होगा। और फिर पंद्रह साल की उम्र तक पहुँचने के बाद आप ने अपने उस वादा की नवीकरण की थी कि हर पल धर्म की सेवा में गुज़ारेंगे। अत: अपने अहद को पूरा करते हुए अपनी जिम्मेदारियों को समझें। इस पश्चिमी समाज में जिसमें आप रहते हैं अपने आप को रोशनी की वह शमा बना लें जिस में सांसारिक लालच और सांसारिक खेल तमाशों का कोई तत्व मौजूद न हो बल्कि वास्तव में अपने आप को आध्यात्मिक प्रकाश से प्रकाशित बना लें।

मैं दुआ करता हूँ कि यह नूर आप के सारी ज़िन्दगी में पैदा हो जाए और यदि आप को इसमें सफलता मिल जाए तो इंशा अल्लाह आप मेरे और आने वाले ख़लीफ़ा की चिंताओं को दूर करने वाले बन जाएंगे क्योंकि चिराग़ चिराग़ जलता है अर्थात नमूना देख कर नमूना धारण किया जाता है। आप में से जो बड़े हैं वे वाक़फीन नौ तहरीक की पहली फसल हैं इसलिए यह आप पर निर्भर है कि आप नमूना स्थापित करें, रुझान की नींव डालने वाले बनें। मैं आपसे कहता हूं कि आगे बढ़ें और नेक रुझान पैदा करने वाले कायद बन जाएं। आप जिस कार्य क्षेत्र में भी हों चाहे मुरब्बी हों, डॉक्टर हों, शिक्षक हों, इतिहासकार हों, अर्थव्यवस्था के विशेषज्ञ हों, वैज्ञानिक हों जिस कार्य क्षेत्र में भी उतरें अपने उच्च प्रदर्शन की चमक दिखाएँ। ऐसा नमूना दिखाएँ कि न केवल आप की वर्तमान पीढ़ी बल्कि भविष्य की आने वाली नस्लें भी आप के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला आप को अपनी जिम्मेदारियों को अच्छे रंग में पूरा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। "

(संबोधन सालना इज्तिमा वाक़फीन नौ यू.के 26 फरवरी 2011)

मजलिस सवाल जवाब

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने वाक़फीन नौ ख़ुद्दाम को प्रश्न करने की अनुमति दी।

*** एक वक्फ नौ ने सवाल किया कि इस्लाम के आलोचक कुरआन की जिन आयतों में युद्ध और किताल का वर्णन है उन पर जब आपत्ति जताते हैं तो हम उन्हें यह जवाब देते हैं कि ये आयतें तब नाज़िल हुईं जब मक्का के काफिरों ने मुसलमानों पर बहुत अत्याचार किए और जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और दूसरे मुसलमानों को मक्का से निकाल दिया और फिर मदीना में भी उन्हें चैन से नहीं रहने दिया तो तब अल्लाह तआला ने हिफाज़त की इजाज़त के लिए यह आयतें नाज़िल की थीं। उस पर आरोप करने वाले कहते हैं कि आप लोग तो यह दावा करते हैं कि क़ुरआन की शिक्षा तो हर ज़माना के लिए है और आज भी कुरआन की शिक्षा रोज़मर्रा के कामकाज के संबंध में मार्गदर्शन करती है तो फिर इस मामले में इन आयतों का आजकल के जीवन से क्या संबंध है?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पहली बात तो यह है कि उन लोगों से जो इस्लाम पर आपत्ति जताते हैं कहें कि कुरआन में तो दो हज़ार से अधिक आयतें हैं जिन में जिहाद का कुछ न कुछ वर्णन मिलता है। अव्वल तो जिहाद और कित्ताल में अंतर है। हर जिहाद कित्ताल नहीं है। असल जंग तो किताल है। दूसरी तरफ बाइबल में कुरआन की तुलना में लगभग तीन गुना अर्थात पांच हज़ार या उससे अधिक आयतें हैं जिनमें चरमपंथ, युद्ध और हत्याओं का आदेश दिया गया है। फिर इंजील जिसके विषय में यह कहते हैं कि शिक्षा यह है कि एक गाल पर थप्पड़ पड़े तो दूसरा भी आगे कर दो इसमें भी दो सौ नब्बे या इकियानवे आयतें ऐसी हैं जिनमें इस प्रकार की शिक्षा है। यह तो इलज़ामी का जवाब है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: दूसरी बात यह है कि तेरह साल तक आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अत्याचार होते रहे लेकिन अल्लाह तआला ने युद्ध की अनुमति नहीं दी। जब जुलमों की इंतिहा हो गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिजरत की और जब हिजरत करने के डेढ़ साल बाद कुफ़्फ़ार ने हमला किया तो उस समय कुरआन की आयत नाज़िल हुई जिसमें मुसलमानों को आत्मरक्षा की अनुमति दी गई। सूर: अलअहज़ाब आयत 40 और 41 आदेश देती हैं कि अब युद्ध करो। और जंग इसलिए करो कि धर्म की रक्षा करनी है। इन आयतों में लिखा कि विरोधियों के हमलों के मामले में न कोई चर्च बाकी रहेगा, न कोई synagogue बाकी रहेगा, न कोई temple बाकी रहेगा और न कोई मस्जिद बाकी रहेगी। तो जब अनुमति मिली तो सभी धर्मों की रक्षा की अनुमति मिली।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो वास्तविक इस्लाम का इतिहास है इससे भी यही साबित होता सिवाय कुछ orientalists के जिन्होंने अपना इतिहास बनाकर यह साबित कर दिया है कि इस्लाम ने हमले किए। हालांकि इस्लाम ने कभी हमला नहीं किया। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब तक इस्लाम को मिटाने के लिए और अत्याचार करने के लिए मुसलमानों पर हमले नहीं किए गए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब नहीं दिया। इसीलिए इसी तरह एक युद्ध से वापस आते हुए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अब हम छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की तरफ लौट रहे हैं तो कुरआन की शिक्षा का प्रसार और तब्लीग़ करने का जहाद है। फिर सुलह हुदैबिया के अनुबंध के बाद अमन और सुरक्षा से कुछ समय बीता, इस दौर में इस्लाम युद्ध के समय की तुलना में कहीं अधिक फैला है। इसलिए युद्ध या आतंकवाद से इस्लाम नहीं फैला।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इसके बाद उमर रज़ि अल्लाह की ख़िलाफत के दौर में जब ईरान ने हमला किया तो आप ने केवल उनके हमले का जवाब दिया। जब मुसलमान सैनिक ईरान के सीमा पर जाकर बैठ गए। तब भी जब ईरान की सेना हमले करती रही तो उमर रज़ि अल्लाह ने अपने सैनिकों और कमांडरों से फ़रमाया तुम ने इस तरह उन पर हमला नहीं करना कि उनके अंदर चले जाओ बल्कि केवल रक्षा करनी है। लेकिन जब बार बार ईरानी हमले हुए तो उस पर हज़रत उमर ने पूछा कि बार बारे हमले क्यों रहे हैं इस समय कमांडर ने कहा कि आप हमारा हाथ रोक रहे हैं कि उन पर हमला नहीं करना। तो इसके बाद जंग कादसिया हुई जो कि मुसलमानों पर अत्याचार करने के परिणाम में हुई। फिर जब मुसलमानों की सेनाएं आगे बढ़ीं तो बढ़ती चली गईं। और फिर वहाँ भी ज़बरदस्ती तो किसी को मुसलमान नहीं बनाया गया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अब रह गई बात कि कुरआन की शिक्षा हर ज़माना के लिए है तो यह बिल्कुल ठीक है। कुरआन में हर समय के लिए शिक्षा है और कुरआन छोटी छोटी संभावना से लेकर बड़ी से बड़ी संभावना cover करता है। यह कहीं नहीं लिखा हुआ कि चूंकि बड़ी संभावना का उल्लेख है इसलिए छोटी संभावना वाले को कोई सज़ा न दो या अगर बड़ी संभावना की स्थिति पैदा नहीं होती तो छोटी संभावना की स्थिति भी न हो। यह तो एक पूर्ण और comprehensive व्यवस्था है जिसने हर संभावना अर्थात हर संभव चीज़ को अपने अंदर शामिल कर लिया है। इसलिए कुरआन में आया कि

अगर ऐसी स्थिति हो तो तुम ने युद्ध करना है। क़ुरआन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरा था। बुख़ारी की हदीस में है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसीह और महदी के आने की भविष्यवाणी फ़रमाई तो फरमाया कि मसीह "यज़उल हरब"करेगा अर्थात युद्ध का खात्मा करेगा। कौन से युद्ध का खात्मा करेगा? धार्मिक युद्धों का ख़ात्मा करेगा। इसका मतलब है कि उस समय धार्मिक युद्ध नहीं होगा। दश्मनों के द्वारा इस्लाम को समाप्त करने के लिए इस तरह हमला नहीं होगा जिस तरह कुफ़्फ़ार आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में करते थे, या ईरानियों ने किया या दूसरों ने किया। यहाँ तक कि ईसाइयों ने भी किया। तो यह कहना कि कुरआन हर समय के लिए है तो यह बिल्कुल सही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "ईसा मसीह कर देगा जंगों का इल्तवा" और एक तरफ फ़रमाया "जो भी लड़ाई को जाएगा वे काफिरों से सख़्त हज़ीमत उठाएगा"। क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसीह के लिए " यज़उल हरब" फरमा दिया था लिए अब अगर आप लड़ाई करने के लिए जाओगे तो आप काफिरों से नुकसान उठाओगे क्योंकि इस्लाम पर हमला बतौर धर्म इस तरह से नहीं हो रहा। अल्लाह तआला ने जहां यह फरमाया कि युद्ध करो और जिहाद करो वहाँ यह भी तो साथ ही सांत्वना दी है कि तुम लोग जीत जाओगे। इस समय कौन सा मुस्लिम देश है जो जीत पा रहा है या कौन सी उपलब्धियां हैं जो मुसलमानों ने युद्ध करके प्राप्त कर ली हैं? इसका मतलब है कि यह जिहाद नहीं है। यह युद्ध अल्लाह तआला के नाम पर नहीं है। मूल बात यह है कि जब मसीह आएगा तो शांति और प्यार और स्नेह फैलाएगा कि जिस तरह से पहले मसीह ने फैलाई थी। पहले मसीह की शिक्षा प्यार, मुहब्बत और शांति ही थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं भी उसी मसीह के नक्शे कदम पर आया हूं। वह मसीह मूसवी था, मैं मसीह मुहम्मदी हूँ और मैंने भी प्यार और स्नेह फैलाना है। इसलिए युद्ध खत्म हो गए। हाँ अगर किसी समय संभावना पैदा होती है कि इस्लाम पर बतौर धर्म हमला हो और इस्लाम को मिटाने की कोशिश की जाए तब जिहाद वाली आयतें लागू हो जाएंगी। लेकिन अब यह स्थिति नहीं है इसलिए ये आयतें लागू नहीं हो रहीं। जब कानून बनाया जाता है या जब घरेलू कानून भी बनते हैं इसका मतलब यह तो नहीं होता कि हर नागरिक को पकड़ कर सज़ा दे दो या फांसी दे दो। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि युद्ध का इल्तवा हो गया अर्थात स्थगित हो गई हैं। क्यों स्थगित हो गई हैं? इसलिए कि इस्लाम पर अब बतौर धर्म हमला नहीं हो रहा। हाँ जब होगा तो कुरआन की आयतें हमें आदेश देती हैं और अनुमति देती हैं कि तब तुम लड़ाई कर सकते हो और फिर इस मामले में अल्लाह तआला यह भी गारंटी देता कि जीत भी तुम्हारी होगी।

*** इस के बाद एक वक्फ नौ ने निवेदन किया कि सीरिया में रासायनिक हमले के बाद अमेरिका ने जो रॉकेट के साथ हवाई हमला किया है क्या हम इस हमले को मुसलमानों के ख़िलाफ या इस्लाम के ख़िलाफ कल्पना कर सकते हैं?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: सवाल यह है कि सीरिया की सरकार जो अपने ही लोगों को और मुसलमानों को मार रही है उसे क्या कहेंगे? एक तरफ रशिया सीरिया की सरकार की मदद कर रहा है और लोगों को मार रहा है। वह भी तो मुसलमान ही हैं। वह भी तो यही कलमा पढ़ते हैं। दूसरी ओर अमेरिका अगर हमला कर रहा है तो इसलिए कर रहा है कि वह मुसलमान जो पहले मारे गए उन पर अत्याचार हुआ उसने कहा दूसरे मुसलमानों को मार दो। तो दोनों द्वारा अत्याचार हो रहा है। इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम अत्याचार को रोको। अगर हाथ से नहीं रोक सकते तो ज़बान से रोको, अगर ज़बान से नहीं रोक सकते तो दुआ करो। हमारे पास तो इस समय शक्ति नहीं है। हम तो दुआ ही कर सकते हैं कि अल्लाह तआला उन्हें मुसलमान नेताओं को भी बुद्धि दे, जो मुसलमान rebel ग्रुप हैं उन्हें भी बुद्धि दे और जो चरमपंथी हैं और इस्लाम के नाम पर अत्याचार कर रहे हैं उन्हें भी बुद्धि दे। तो दोनों ने block बना लिए हैं। एक मुसलमान ग्रुप ने रशिया के साथ block बनाकर गठजोड़ कर लिया है और दूसरे ने अमेरिका के साथ कर लिया है। तो हम इसे मुसलमानों पर हमला कैसे ठहरा सकते हैं? मुसलमानों के अंदर ही पाखंड पैदा हुआ है तो हम फिर यह कैसे कह सकते हैं। फिर तुर्की जो कुर्दों को मार रहा या सीरियन सरकार सुन्नियों और सुन्नी शिया को मार रहा है। दिन रात आतंकवादी हमले हो रहे हैं। कल तालिबान ने अफगानिस्तान में 130 सैनिक मार दिये। तो क्या यह इस्लाम के ख़िलाफ युद्ध है? यह तो मुसलमान ख़ुद कपटी बने हुए हैं और यह होना ही था। क्योंकि यह इस्लामी युद्ध नहीं। जैसा कि मैंने पहले बताया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "तुम हार जाओगे।" अगर तुम इस्लाम के नाम पर युद्ध करने की कोशिश करोगे या अगर आई.एस इस्लाम के नाम पर युद्ध करने की कोशिश कर रहा है तो मार खा खाकर समाप्त हो गया। क्या रह गया है अब उन का ? उन्होंने हार तो उठा ली है। वास्तव में तो यह था कि अगर वह इस्लाम के नाम पर युद्ध कर रहे थे और वे इस्लामी युद्ध था तो उन्हें बजाय समाप्ति के जीतने चाहिए था। अल्लाह तआला तो जीतने का वादा दिया हुआ है। अल्लाह तआला ने यह निशानी बताई है कि अगर तुम इस्लाम के नाम पर युद्ध कर रहे हो तो फिर तुम ज़रूर जीतोगे क्योंकि मेरी मदद तुम्हारे साथ है। आप को कहीं इनका जीतना नज़र आ रहा? अंत में फित्ना हा नज़र आता है। अंत में जाकर या तो याजूज की गोद में बैठ जाते हैं या फिर माजूज की गोद में बैठ जाते हैं और दज्जाल के पास चले जाते हैं और उनसे कहते हैं कि हमारा निर्णय करा दो। तो जब ख़ुद दज्जाल के पास अपने निर्णय करवाने चले जाते हैं तो फिर इस्लाम कहाँ रह गया है?

*** इस के बाद एक वक्फ नौ ने सवाल किया कि पाकिस्तान से जो नए लोग यहाँ शरण पर आते हैं उन्हें आमतौर वर्क परमिट नहीं होता लेकिन उनमें से कुछ लोग फिर भी काम कर रहे होते हैं। और फिर जब वे काम करते हैं उस पर टैक्स या बीमा आदि भी अदा नहीं करते। तो क्या ऐसे लोगों को चंदा देना चाहिए?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जो भी ग़ैर कानूनी काम द्वारा आमद पैदा हो रही है उस पर हमें चंदा नहीं लेना चाहिए। इसी लिए तो कई उपदेश भी कह चुका हूं कि टैक्स न चोरी करो। टैक्स न बचाओ। यह ग़लत प्रक्रिया है। फिर यह है कि अगर आप शरई लिहाज़ से भी ग़लत काम कर रहे हो, शराब बेच रहे हो जिसके विषय में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि शराब बेचने वाला, शराब कढ़ने वाला, शराब पिलाने वाला, शराब बनाने वाला यह सब तअनती जहन्नमी हैं। तो ऐसी स्थिति में तो हम चंदा कैसे ले सकते हैं? क़ुरान ने इस सीमा तक अनुमति दी कि अगर तुम भूख से मर रहे हो तो तुम सूअर खा सकते हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: सूअर भी अब हमारे लिए एक बहुत बड़ा हव्वा बन गया हुआ है और लोग सूअर का सिर लाकर हमारी मस्जिदों में रख देते हैं और समझते हैं कि हम ने मुसलमानों की भावनाओं को उभार दिए। हालांकि इसमें भावनाएं उभारने की कोई ज़रूरत नहीं। अगर एक सिर पड़ा हुआ है तो उन से कहो तीन चार और लाकर रख दू तो वह ख़ुद ही चुप हो जाएंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: तो मजबूरी की अवस्था में तो सूअर ख़ाने की भी अनुमति है लेकिन केवल उनके लिए जिन्हें इज़तेरार है, हमारे लिए नहीं। जमाअत को कोई ऐसी बात नहीं है कि अवैध कमाई या ग़ैर शरई काम की कमाई का चंदा ले। जो ऐसा करते हैं वे ग़लत हैं। मैं ख़ुत्बों में प्रशासन को भी कई बार कह चुका हों।

***एक वक्फ नौ ने सवाल किया कि एक हदीस है कि मसीह मौऊद जब आएगा तो सीरिया के पूर्व में एक मिनारा पर उतरेगा। ग़ैर अहमदी कहते हैं कि सीरिया में एक मस्जिद है जिस के मिनारा पर वह उतरेंगे। जबकि हमारे मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पैदाइश के बाद कादियान में मीनार बनाई गई थी।**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मसीह का मीनार पर उतरना तो एक उपमा है। यह तो एक उदाहरण दिया गया है कि मसीह दमिश्क के पूर्व में उतरेगा। आप नक्शे पर देखें तो कादियान और पंजाब दमिश्क के पूर्व ही बनता है। बाकी जहां तक कादियान का मिनारतुल मसीह का संबंध है तो इस संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि चूंकि मीनार मसीह की निशानी बताई गई थी इसलिए में ज़ाहरी तौर पर भी मिनार बना रहा हूं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह तो नहीं कहा कि यह मीनार इसलिए बना रहा हूं कि यह मीनार मेरे आगमन की दलील बन जाए। बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में तो वह मीनार बना ही नहीं था। केवल कुछ फुट तक उठा था। यह तो ख़िलाफत सानिया के युग में बना है। तो हर हदीस की व्याख्या होती है। जिस तरह अभी एक ख़ादिम ने हदीसकतुस्सालेहीन से हदीस पढ़कर उसकी व्याख्या बताई है उसी तरह इस हदीस की व्याख्या भी इस पुस्तक में लिखी हुई है। बहुत लंबी व्याख्या है। वह

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 2017-2019/45- Vol. 2 Thursday 12 October 2017 Issue No. 41

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पढ़ लें। आप पर पूरा स्पष्ट हो जाएगा। नहीं तो अपने सैक्रेटरी वक्फे नौ से कहें कि वह आपको हदीस निकाल कर दे दें।

*एक वक्फ नौ ने सवाल किया कि अभी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि क़ुरआन की आयतें हर ज़माने के लिए हैं। पाकिस्तान में जो मौलवी हैं वे पाकिस्तान में जमाअत अहमदिया को बतौर जमाअत समाप्त करने के लिए हम पर अत्याचार कर रहे हैं, हमारे लोगों को बंदी बना रहे हैं, हमारे लोगों को शहीद कर रहे हैं तो इन आयतों की रोशनी में हमारे लिए क्या हुक्म है?

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हमारे लिए तो बड़ा स्पष्ट आदेश है कि जिस देश में रहते हो वहाँ फित्ना और शरारत पैदा नहीं करनी। फित्ना के बारे में कुरआन में आता कि "अल्फ़ितनतो अशद्दों मिनल क़त्ल। अर्थात फित्ना हत्या से ज्यादा बुरी बात है। इसलिए पाकिस्तान में हमारी सरकार नहीं है। हम उस देश के नागरिक हैं और देश के कानून को मानने वाले हैं। लेकिन जहां वह कानून शरीयत से टकराता है वहाँ हम उस कानून को नहीं मानते। अल्लाह तआला का हुक्म है कि तुम नमाज़ पढ़ो। तुम कलमा पढ़ो। तुम अस्सलामो अलैकुम कहो और अगर तुम अपने आप को मुसलमान कहते हो तो तुम मुसलमान हो। लेकिन पाकिस्तान में धर्म के संदर्भ जो कानून है वह तो जंगल का कानून है। इसलिए हम केवल कानून नहीं मानते। लेकिन हमारा यह काम नहीं है कि हम युद्ध करें। क्योंकि हम ने उस देश से नहीं लड़ना। इस बारे में कुरआन कहता है अगर तुम ऐसे देश में नहीं रह सकते हैं और तुम पर अत्याचार हो रहा है तो तुम वहाँ से चले जाओ। इसीलिए तो लोग हिजरत करके यहाँ आ गए हैं। वहाँ अत्याचार बर्दाश्त नहीं कर सकते तो यहाँ आ गए हैं। लेकिन बहुत सारे लोग हैं जो अत्याचार सहन कर सकते हैं और वे वहाँ बैठे हैं। तो अगर आप का यह सवाल है कि हम उनके साथ युद्ध कर सकते हैं, तो इसका जवाब है कि हम युद्ध नहीं कर सकते क्योंकि वहाँ हमारी सरकार नहीं है। हाँ अगर किसी समय अहमदियों के पास कोई देश होता और वहाँ अहमदियों की सरकार होती है और उस पर कोई दूसरी सरकार हमला करती है तो फिर युद्ध का जवाब दे देंगे।

*एक वक्फे नौ ख़ादिम ने सवाल करते हुए कहा कि ग़ैर अहमदी मुसलमान सवाल करते हैं कि अहमदी और अन्य मुसलमानों का कुरआन अलग अलग है। तो हम उन्हें क्या जवाब कि हमारा कुरआन सही है।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम तो यह कहते ही नहीं कि हमारा कुरआन अलग है और उन का कुरआन अलग है। उनसे कहो कि तुम्हारा करआं है वही हम पढ़ते हैं। यहां पचास प्रतिशत ऐसे हैं जिनके पास तुर्की का छपा हुआ कुरआन या कुछ अन्य स्थानों का छपा हुआ कुरआन हैं। पाकिस्तान में एक "ताज कंपनी" होती थी मैंने तो बचपन में ही कंपनी का छपा हुआ क़ुरआन पढ़ा है। इस लिए हम तो वही कुरआन पढ़ते हैं जो दूसरे ग़ैर अहमदी पढ़ते हैं। हाँ तफ्सीरें भिन्न है और टिप्पणीकारों ने ख़ुद लिखा है कि कुरआन के कई अर्थ हैं। बल्कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने लिखा कि कुछ टिप्पणीकार लिखते हैं कि जब तक कोई मुफ़स्सिर कुरआन की एक आयत की बीस या बाईस तफ्सीर नहीं कर लेता उस समय तक वह मुफ़स्सिर नहीं कहला सकता। तो हर मुफ़स्सिर ने कुरआन की अपनी तफ्सीर की हुई है। कुछ पुराने टिप्पणीकार और उलमा और बुज़ुर्गों ने जो कुरआन की एक तफ्सीर की हुई हैं उन में से कुछ को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने quote किया है कि देखो मैंने कुरआन की यह तफ्सीर की है और अमुक मुफ़स्सिर ने भी उसकी यही तफ्सीर की है। इब्ने अरबी ने भी यह लिखा या अमुक अमुक मुफ़स्सिर ने यह लिखा। तो हमारा कुरआन तो उनके कुरआन से अलग है ही नहीं। कौन कहता है कि अलग है? आप इस बात पर क्यों चर्चा करते हैं कि कुरआन अलग है? उनसे कहो कि तुम्हारा कुरआन है वह लाओ वह पढ़ता हूं और जो कुरआन मैं पढ़ता हूं वह तुम ले जाओ और मुझे बताओ कि कौन से शब्द हमारे और तुम्हारे कुरआन में मतभेद है? एक शब्द भी नहीं है। एक शब्द क्या एक अक्षर भी या एक बिंदु भी हमारे कुरआन के दूसरे कुरआन से अलग नहीं है। कुरआन के विषय में तो अल्लाह तआला ने फरमाया है कि "मैंने उसकी रक्षा करनी है।" और कुरआन चौदह सौ साल से सुरक्षित है। हमारे यहां कुरआन के हाफिज हैं वे पाकिस्तान में भी कभी कभी जब क़िरअत का मुकाबला होता है तो वहाँ जा कर तिलावत प्रतियोगिता में भाग लेते हैं और पुरस्कार लेकर आते हैं। तो वह वही कुरआन पढ़ कर पुरस्कार लेकर आते हैं। अन्यथा वे आपत्ति न कर दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस चर्चा में जाने की ज़रूरत ही नहीं कि तुम्हारा कुरआन और है और हमारा और है। बल्कि उन्हें कहो हम तुम्हारे वाला कुरआन ही पढ़ते हैं। अपने पास कुरआन रखना चाहिए और उन से कहो कि कुरआन लाओ और मुकाबला कर लो। केवल मौखिक तर्क से कुछ नहीं होता। तुरंत अनुकरण करके दिखाना चाहिए। back-foot पर जाकर न खेला करें बल्कि ठोस तर्क दिया करें।

* इस के बाद एक वक्फ नौ ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पिछले ख़ुत्बा जुम्अ: में नमाज़ के महत्व के संदर्भ से फ़रमाया था नमाज़ जमाअत के साथ अदा की जाए। अगर नमाज़ केंद्र दूर है या हम अकेले हैं या काम की वजह से नमाज़ जमाअत से अदा नहीं कर सकते तो इस मामले में किया करना चाहिए?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अगर अकेले हैं और साथ कोई नहीं है तब तो मजबूरी है। मैंने भी यही कहा था कि मजबूरी है तो दूसरी बात है अन्यथा अधिकतम कोशिश करें कि नमाज़ें जमाअत से अदा करें। हदीस में तो आया कि अगर आप सिहरा में जा रहे हो और नमाज़ का वक्त हो गया तो आप वहाँ अज़ान दें हालांकि तुम्हें वहाँ कोई नज़र नहीं आ रहा। दूर दूर तक केवल खुला मैदान नज़र आ रहा है। तो आप अज़ान दे दें। शायद हो सकता है कि कोई भूला बसरा यात्री कहीं किसी टीले के पीछे बैठा हो और वह तुम्हारी अज़ान की आवाज़ सुन कर आ जाए और तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ ले। लेकिन यहां अगर आप अज़ानें दोगे तो तुम्हें मुशकिल पैदा हो जाएगी इसलिए अपनी नमाज़ पढ़ लो। लेकिन कोशिश यह करो कि जमाअत से नमाज़ें पढ़नी हैं। किसी चीज़ को बहाना न बनाओ। और जब घर में हो तो अपने भाई बहन, पत्नी और बच्चों के साथ इकट्ठे होकर नमाज़ पढ़ सकते हैं। **(शेष.....)**

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad